पहेलियाँ

अम्बिका पारीक



पहेलियाँ

सम्पादक
अम्बिका पारीक

राजस्थान पत्रिका प्रकाशन

पहेलियाँ



सिर छोटा और पेट बड़ा,
तीन टांग पर रहे खड़ा।
खाता हवा और पीता तेल,
फिर दिखलाता अपना खेल।

स्टोव



खाना कभी नहीं खाता वह,
और न पीता पानी।
उसकी बुद्धि के आगे तो,
हार मानते ज्ञानी।

कम्प्यूटर



पानी से मैं पैदा होता,
उजला मेरा रंग।
स्वाद बढ़ाता घुलमिल,
करके मैं भोजन के संग।

नमक



खिलाड़ियों का महाकुंभ यह कहलाता है,
चार वर्षों के अंतराल से यह आता है।

ओलम्पिक खेल



पांच वृत्त ओलम्पिक प्रतीक बनाते हैं।
किन आदर्शों पर चलना वह हमें सिखाते हैं ?

विश्वशांति, सद्भाव व मैत्री



बतलाओ वह शहर,
जहां पर आया था एक अंधा ज्वार।
उग्रवाद से, पलक मूंदते,
ग्यारह खिलाड़ी हुए शिकार।

म्यूनिख प. जर्मनी 1972



निष्कासित था पांच वर्षों तक,
वह जांबाज खिलाड़ी,
पदक पड़ा लौटाना,
उसने जीती बाजी हारी।

बेन जॉनसन- सियोल ओलम्पिक 1988



कीर्तिमान बनाया,
जीते सात पदक एक साथ।
अमरीका का रहने वाला,
कौन था वह तैराक ?

मार्क स्पिट्ज- म्यूनिख ओलम्पिक- 1972



वीर साहसी सुभट महान,
सह न सका अपना अपमान ।
लूट लिए मुगलों के प्रदेश,
याद करेगा अपना देश।

शिवाजी



छोड़ राज-पाट जब राणा, जा रहे थे रानी सहित।
दे दिया सर्वस्व दान में, था वीर वह कपट रहित।

भामाशाह



ईमानदार, निष्ठावान,
शौर्य की प्रतिमूर्ति।
स्वामी को राज दिलाया
नैतिकता की महामूर्ति।

वीर दुर्गादास



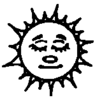
दे न सकेगा दान कोई भी,
जितना उसने दे डाला।
वाह! कलेजे का टुकड़ा,
बलिदान उसी ने कर डाला।

पन्नाधाय



बचपन में बना वह शासक,
दुश्मनों को मार गिराया।
पर गौरी ने धोखा देकर,
तराईन ताल में पकड़वाया।

पृथ्वीराज चौहान



धोखा दिया भाई ने फिर भी,
रुका नहीं वह वीर महान ।
फिरा भटकता वन जंगल में,
प्यारा उसे था राजस्थान।

महाराणा प्रताप



काला है पर काग नहीं,
कहें नाग पर सांप नहीं।
एक हाथ पर पैर चार,
बतलाओ कर सोच-विचार।

हाथी



एक अनोखा है चौपाया,
भारी भरकम उसकी काया।
नहीं सवारी का कुछ काम,
पानी ही है उसका धाम।

दरियाई घोड़ा



एक सींग का है चौपाया,
मोटी उसकी खाल।
और खाल से किसी जमाने में,
बनती थी ढाल।

गेंडा



लंबी टांगें लंबी गर्दन,
लेकिन नहीं जिराफ।
बेढ़ब डीलडौल में सचमुच,
समझ गये क्या आप।

ऊंट



संग मदारी के वह आता,
ठुमक-ठुमक कर नाच दिखाता।
पड़ी नाक में बड़ी नकेल,
खुश होकर सब देखें खेल।

भालू



सोने के पलनों में पला था,
लेकिन छोड़ दिया घरबार।
जैन धर्म के तीर्थंकर बने,
प्रेरणा ले सारा संसार।

महावीर स्वामी



वृद्ध पुरुष, रोगी, एक मृतक;
देखा एक संन्यासी को।
देख, ज्ञान की खोज में निकले
ज्ञान मिला पूर्णमासी को ।

महात्मा बुद्ध



अल्पायु में पिता चल बसे,
गया गये करने पिंडदान।
ईश्वरपुरी के शिष्य बन गये,
मिला संत को आत्मज्ञान ।

चैतन्य महाप्रभु



न हिन्दू थे न मुस्लिम थे,
समझे दोनों धर्म समान ।
बचपन से बैठे संतों में,
बने अंत में संत महान ।

कबीर



दर्जी के घर पैदा हुए थे,
उन्हें पसंद था जन में प्यार ।
भक्ति आंदोलन के प्रभु संत,
सिखा गये जीव का सार।

नामदेव



एक किले के द्वार अनेक,
रहने वाला पर है एक।
फिर भी बाहर सके ना जाए,
जब निकले दीवार गिराय।

मच्छरदानी



सिर काटो तो तोला जाऊं,
पैर कटे तो वृक्ष कहाऊं।
कमर कटे तो जंगल जानो,
जरा मुझे तो तुम पहचानो।

बटन



अलग करो सिर को मेरे,
तो सीना कहलाऊं ।
कितना कोमल हूं मैं देखो,
हवा लगे मर जाऊं ।

पसीना



एक वस्तु को मैंने देखा,
जिस पर हैं दांत।
बिना मुख के बोलकर,
करे रसीली बात।

हारमोनियम



तन में है काला पानी,
कलम कहे मुझको नानी।
प्रथम कटे बनती वायु,
अंत कटे तो रोग भगाऊं।

दवात



बहुत दूर से वह आती,
बहुत दूर तक वह जाती।
कुछ खाये ना कुछ पिये,
फिर कैसे रहे जिये।

चिट्ठी



छः पांव हैं कुल उसके,
बीच में हैं पूंछ।
हर किसी के आये काम,
जल्दी बोलो उसका नाम।

तराजू



पत्थर पर पत्थर,
पत्थर पर पैसा।
बिना पानी घर बनाये,
वह कारीगर कैसा।

मकड़ी



दो अक्षर का मेरा नाम,
मेरे बिना चले ना काम।
कहीं नहीं आऊं जाऊं,
फिर भी आया गया कहलाऊं ।

नल



पेट फोड़ा तो कल
सिर तोड़ा तो मल
पांव टूटें तो कम
हंसता है हरदम।

कमल



जमीन के ऊपर है,
अन्दर भी रहता है।
धुंआ बन गगन में,
इधर-उधर बहता है।

पानी



होता कागज, खाता कागज।
ले जाता और लाता कागज।

लिफाफा



सर्दी में प्यारा लगता,
गरमी में करे तबाही।
स्थिर रहता पर कहते उसको,
आसमान का राही।

सूरज



सूरज के संग आती है,
सूरज के संग जाती है।
अच्छी लगती कभी-कभी,
कभी न बिल्कुल भाती है।

धूप



पेट कटे वचन बन जाती,
सिर कटे से यल।
मैं तो मीठी राग सुनाकर,
मीठा पाती फल।

कोयल



चौड़ा और विशाल जानवर,
खाता है यह चारा।
भोजन का भंडार बना ले,
मेहनत करता बेचारा।

ऊंट



मध्य कटे आदमी बनती,
प्रथम कटे प्रत्येक।
मैं तो सबको पानी पिलाती,
करती काम हूं नेक।

नहर



मैं हूं लंबू-बंबू भैया,
मीठा रस है मेरा।
मीठा जूस पिलाना तुमको,
काम है भैया मेरा।

गन्ना



अंत कटे से चिल्लाता हूं
मध्य कटे कर लेता ओट।
मुझमें एक पुरानी सभ्यता,
नहीं है रत्ती भर भी खोट।

आहड़



दिन में लटके, रात में भटके।
ताजा फल खाता है डट के।

चमगादड़



अन्दर जाना है तो भी,
उसके अन्दर से निकलो।
बाहर आना है तो भी,
उसके अन्दर से निकलो।

दरवाजा



ले लकड़ी आकार बढ़ाया,
दबा-दबा के।
तपा आंच पर, धरा पेट में,
चबा-चबा के।

रोटी



पहले सोलह से बनता था,
अब बनता है सौ से।
चला रहा व्यवसाय यहां पर,
विगत कई वर्षों से।

रुपया



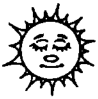
लम्बा तना, न शाखा एक।
हर पत्ते पर कांटा देख।

खजूर



चढूं नाक पर पकडूं कान,
फिर भी नहीं घटाऊं मान।

चश्मा



रंग-बिरंगी सड़क बनी है मध्य-गगन।
लेकिन उस पर चले न कोई भी वाहन।

इन्द्रधनुष



करती काम जलाने का पर
भोजन सभी पकाते हैं।
और रात के अंधियारे में
वह प्रकाश भी लाती है।

आग



आने पर भी वही कहेंगे,
जब सज्जन आयेंगे।
जाने पर भी वही कहेंगे,
जब सज्जन जायेंगे।

पधारिये



कान खड़े कर लम्बे-लम्बे,
पछताता है बल्लू।
कछुए ने बाजी मारी,
तुम क्यों सोए थे लल्लू।

खरगोश



जिलाती है और जलाती है।
सखि संग मिल जल बनाती है।

ऑक्सीजन



उज्ज्वल मेरा रंग है,
अक्षर बने हैं स्याह ।
पढ़े-लिखों के पास रहूं मैं,
उनको मेरी चाह ।

पुस्तक



शक्तिवान संसार में,
करूं मनुज के काम।
पानी पीते ही तुरत,
जाऊं मैं सुरधाम

अग्नि



बिना पैरों के चलते देखा,
इत-उत उसको फिरते देखा।
काम अनोखे करते देखा,
पानी से वह मरते देखा।

भाप



हाथ, पैर अरु जीभ नहीं,
पहुंचूं देश-विदेश।
जहां पहुंचता काम इक,
देता नव संदेश।

पत्र



नाम भले हो दो अक्षर का,
तन है लम्बा भारी।
लोह-मार्ग पर दौड़ लगाती,
करते लोग सवारी।

रेल



सबसे लम्बी गर्दन-टांगे,
इसमें तनिक न झूंठ।
खाता पेड़ों के पत्ते पर,
समझ न लेना ऊंट ।

जिराफ



तन गई गगन में,
सतरंगी डोर।
झुके हुए उसके,
धरती पर छोर।

इन्द्रधनुष



तन लोहे का पांव रबर के,
उसे चलाते हैं दम भरके।

साइकिल



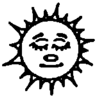
लकड़ी खाकर आग उगलता,
काम सभी का उससे चलता।

चूल्हा



प्रथम कटे तो हूं शरीर में,
मध्य कटे पर जंगल।
सचमुच मेरी रक्षा में ही,
है सबका मंगल।

वतन



एक लाल है मेरे अंदर,
लेकिन बुरी बला।
जो छुटकारा पाए इससे,
कहते लोग भला।

लालच



काशी में मैं रहूं अकेला,
कलकत्ता में दो-दो।
दिल्ली में नहीं पाओगे तुम,
कानपुर में खोजो।

'क' अक्षर



आदि कटा कर बनी कला कृति,
मध्य कटा तो चक्र चला।
अन्त कटा तो माल चकाचक,
खाकर सब का पेट पला।

चकला



आदि कटे तो धूम मचा दे,
मध्य कटे तो बने चचा।
अन्त कटे तो चम-चम-चमके,
खुरच-खुरच ले माल पचा।

चमचा



आदि कटे उर डाह लगा दे,
मध्य कटे कछु कह सुन दे।
अन्त उठाए कड़ा कदम तो,
मधुर सलौने व्यंजन दे।

कड़ाह



आदि कटा कर लटा बिखेरे,
मध्य कटाय पटा बाजी।
अन्त कटा पल-पल में रूठे,
पल में हो जाए राजी।

पलटा



आदि कटा कर टोरा खाए,
मध्य कटा फिर करा करे।
अन्त कटे तो कटो भले ही,
दूध पिला कर पेट भरे।

कटोरा



आदि कटे तो गीत सुनाऊं,
मध्य कटे संत रह जाऊं।
अंत कटे संगी रह जाता,
पूरा हो सबके मन भाता ।

संगीत



पैर नहीं है उसके लेकिन,
दूर-दूर तक जाता।
कभी हंसाता कभी रुलाता,
लेकिन बोल न पाता।

पत्र



सुबह शाम वहां लगता मेला,
झुक-झुक करे सलाम।
मंदिर, मस्जिद नहीं गुरुद्वारा,
देना उसका काम।

कुंआ



खाती पीती नहीं कभी कुछ,
हरदम चलती जाए।
पल-पल बड़ा कीमती,
सबको सदा यही समझाए।

घड़ी



तीन अक्षर का मेरा नाम,
आता हूं खाने के काम।
गर्मी का अमृत कहलाता,
चटनी-शर्बत मेरा है बनता।

पुदीना



आदि कटे से बनता मल,
मध्य कटे तो होता कल।
अंत कटे तो थोड़ा कहलाता,
बीच सरोवर के मैं रहता।

कमल



तीन अक्षर की मेरी काया,
ठण्डी हवा देना काम।
गर्मी में तो बिन मेरे,
हो जाता आराम–हराम।

कूलर



आदि कटे से मापक बन जाऊं,
अंत कटे पक्षी कहलाऊं।
मध्य कटे तो काम जानो,
जल्दी से मेरा नाम बखानो।

कागज



तीन अक्षर का मेरा नाम,
गरमी देना मेरा काम।
प्रथम कटे तो धूल कहलाऊं,
अंत कटे तो सूर कहाऊं।

सूरज



एक समय एक पंछी आएं,
थोड़ा देखकर छिपछिप जाएं।
समझ के कहना प्यारे बच्चों,
आग बिना उजाला तुम पर।

जुगनू



हर पल जो मुस्काए,
सदा सबके मन को भाए,
महक अपनी जो बिखराए,
जो कांटो के संग जीवन बिताए,
बतलाओं वो क्या कहलाये ?

गुलाब का फूल



तीन पांव है, हाथ नहीं;
तन है बड़ा कठोर।
आती जाती कही नहीं,
खड़ी रहे नित ठोर।

तिपाई



रोज सवेरे आता है,
नये समाचार लाता है।
जो कोई पढ़ता उसको,
बुद्धिमान बन जाता है।

अखबार



छाता जैसा उल्टा छाता,
टी.वी. से है उसका नाता

टी.वी. डिस्क

जैसे को तैसा बताय।
नहीं तनिक भी वह छिपाय॥
यदि गिर जाए जमीन पर
चूर-चूर हो जाए।

दर्पण



लाल गाय, खाना खाय;
पानी पीते ही मर जाय।

आग

ऊपर से गिरा, बुलबुल का बच्चा।
ऊपर से लाल, अन्दर से कच्चा।

गुलगुला



कभी न रुकती, कभी न थकती,
धरती–आकाश, सब एक करती,
हरदम सबके, पास ही रहती।

हवा



मैं हूं बड़ी रसीली छोरी,
रंग पीला, चक्कर गोल,
बिकती हूं बाजार में मोल।

जलेबी



खाने में अनमोल
मैं काली हूं गोल–गोल
बिकती हूं बाजार में मोल
तोड़ो तो उज्ज्वल हूं मैं
खाओ तो तारीफ अनमोल

गुलाबजामुन



काला–काला गोल तवे सा,
रोटी नहीं पकाऊं
मेरी सुई तन में चुभते ही
गाना तुम्हें सुनाऊँ।

रिकार्ड प्लेयर



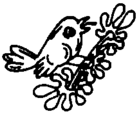
दिखने में मैं छोटा हूं,
पर बहुत ही खोटा हूं।
जो कोई खेले मुझसे खेले,
भस्म उसे कर देता हूं।

माचिस



रात में आते बनके नूर,
दिन में हो जाते काफूर।
मामा क्या हैं पूरे जोकर,
बढ़ते घटते रहते अक्सर।

चन्द्रमा



पत्ते में है बन्द,
स्वादिष्ट कलाकन्द।
बाजार हो या मेला,
खाया जाता अकेला।

केला



एक पैर से खड़ा रहे,
चले सीस के बल।
चन्द्रकला को चुरा लिया,
निज बुद्धि के बल।

परकार



पगड़ी ओढ़े, पगड़ी छोड़े,
कैसा मुर्दा आया।
पड़ा धरा पर नाच दिखाये,
अजब है इसकी काया।

लट्टू



दूध का पोता, दही का बच्चा
लोग उसे खाते हैं कच्चा।

छाछ



एक वस्तु को हमने देखा,
छाती ऊपर दांत।
बिन मुख गावे राग रागिनी,
करे रसीली बात।

हारमोनियम



दो भाई एक रंग के,
गहरा उनका नाता।
एक भाई बिछुड़ गया तो,
दूजा काम न आता।

जूता



मुख से सदा मुझे बोलो,
तो सम्मान तुम्हारा है।
उस पर कोई आंच नहीं,
जिसने मुझे संवारा है।

सत्य



एक किले में चोर बसे हैं,
सबका मुंह है काला।
पूंछ पकड़ कर आग लगाई,
झट कर दिया उजाला।

माचिस



ऐसा कौन-सा जानवर है, जिसे पृथ्वी पर मनुष्य के बाद सबसे अधिक समझदार माना जाता है?

चिम्पांजी



एक जानवर ऐसा भी है, जो अपना भोजन धोकर खाता है। उस जानवर का नाम बताइए ?

रैकून



हाथी को थल का सबसे भारी पशु माना जाता है। बताइए कि हाथी के बाद इस थल का दूसरा सबसे भारी पशु कौन सा है ?

दरियाई घोड़ा



प्राणियों के शरीर पर बालों की एक तह होती है। किस जानवर के शरीर पर बालों की दो तहें होती हैं ?

ऊदबिलाव



किस जानवर को जंगली जानवरों में सबसे सुन्दर माना जाता है ?

तेंदुआ



सभी प्राणियों को गर्मी में पसीना आता है। यह एक स्वभाविक क्रिया है। लेकिन, किस जानवर को सख्त गर्मी में भी पसीना नहीं आता ?

कुत्ता



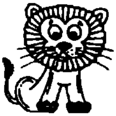
घर में उछलकूद करता,
नीली आंखों से मैं डरता।
घर में जो कुछ मिल जाता,
कुतर-कुतर उसको खा जाता।

चूहा



एक अचम्भा मैंने देखा
लगी कुएं में आग
पानी-पानी जल गया
मछली खेले फाग।

पका चावल



कोर्ट, कचहरी या थाना हो,
हर जगह लोग मुझे खाते हैं।
दिखता हूं न मैं फलता हूं,
फिर भी मुझसे काम चलाते।

कसम



अफसर, नेता, मंत्री, संत्री
गुरु चेला के हाथ में रहता हूं
मेरे बिना हर काम अधूरा
लिखकर मैं काम करता हूं।

कलम



छोटा सा है एक अजूबा,
जो दिन में नजर न आये।
रात में सोते वक्त आकर,
हम सबको कहानी सुनाये।

मच्छर



हाथ में हरा मुंह में लाल,
क्या चीज है वो बताओ तत्काल।

पान



सींग हैं, पर बकरी नहीं,
काठी है, पर घोड़ा नहीं।
ब्रेक हैं, पर कार नहीं,
घंटी है, पर किवाड़ नहीं।

साइकिल



चार पांव, पर चल न पाऊं,
बिना हिलाए हिल न पाऊं।
फिर भी सबको दूं आराम,
बोलो बच्चों मेरा नाम।

कुर्सी



एक गुफा और बत्तीस चोर,
बत्तीस रहते तीन ओर।
बारह घंटे करते काम,
बाकी समय करें आराम।

दांत



ठंडी हवा संदेश लाती,
तब मैं हूं धरती पर आती।
बच्चों के मन को अति भाती,
किसानों को भी खूब सुहाती।

वर्षा



अंत कटे, अंधा हो जाय,
फिर भी करे प्रकाश।
आदि कटे तो रज बन जाय,
गंगा नहीं निवास।

सूरज



सूर्य मेरे पिता,
वर्षा की बूंदें माता।
झुका धनुष सा मेरा अंग,
मेरे कपड़ों में सातों रंग।

इन्द्रधनुष



शक्तिवान संसार में,
करूं मनुज के काम।
पानी पीते ही तुरत,
जाऊं मैं सुरधाम।

अग्नि



देने से घटती नहीं,
करिए जी भर दान।
छीने से छिनती नहीं,
देते बढ़ता मान।

विद्या



काली-काली साड़ी पहने,
मुखड़ा उसका गोरा।
लड़का नहीं, न ही लड़की है,
रोज लगाता फेरा।

रात



मेरे बिन संसार में,
मानव ठोकर खाता।
जिस मानव के पास मैं,
चैन करत दिन रात।

बुद्धि



मध्य कटे तो कान बनूं,
आदि कटे तो नून ।
करता हूं इंसाफ भले,
पड़े बहाना खून।

कानून



सारे घर में मुझ बिना,
रहता तम का वास।
मेरे आने से तुरन्त,
होता उसका नाश।

प्रकाश



देने से वह कभी न घटती,
लेने से वह सदा बढ़ती।
चोर चुराता कभी न उसको,
ऐसा धन कहते हैं किसको ?

सज्जनता



फल की जात,
अरण्डी-पात।
कालीमिर्ची-बीज,
क्या है वो चीज ?

पपीता



ऊपर से कुछ हरा-हरा,
अन्दर से है भरा-भरा।
छिलके दूर हटा लो जी,
बीज नहीं है खा लो जी।

केला



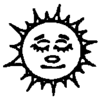
एक छबीली जा बैठी है ऊंची डाली,
बांके चन्दा जैसी झूम रही मतवाली।
आने-जाने वाले राही को ललचाए,
लगते ही हाथों मुंह में पानी भर जाए।

इमली



काला हूं मतवाला हूं,
और मधुर रस वाला हूं।
तीन वर्ण का नाम बना,
मध्य हटा तो जान बना।

जामुन



आधा नाम जानकी,
आधा नाम नतीजा।
भाई-बहन सभी खाये,
खाये काका-भतीजा।

सीताफल



एक चांद अठारह तारे,
खेले मुन्ना-मुन्नी प्यारे।

कैरमबोर्ड

कौन-सी वस्तु है, जिसके न हाथ है न पैर।
आदमी चाहे तो उसे, भेज सकता दूर।

चिट्ठी



मेरा साथी एक निराला,
मैं हूं गोरा वह है काला।
जो मैं करता वह भी करता
नहीं बोलता ऐसा डरता।

परछाई



बिन चबाये सभी,
मुझे निगल जाते।

पानी

पीटोगे तो चीखूंगी,
भीड़ इकट्ठी कर दूंगी।

ढोलक



दोहरी पोशाक,
दिल गोरा चिट्टा साफ।

नारियल

लो ये और अजायब,
कपड़े-लत्ते उतर गये तो गायब।

पत्ता गोभी



नदी किनारे साधु उतरे,
करे हरी का जाप।
मांस-मच्छी को उत्तम मानें
कन्द मूल में पाप।

बगुला



चिपका ज्योंही काम से लागा,
फिसल पड़े बाबा वैरागी।
पालथी खोली, आसन उखड़ा,
डेरे से भी मोड़ा मुखड़ा।

ताला



छोटी सी बिटिया,
गज भर की चुटिया।

सुईधागा



काली चादर में चावल बंधे,
दिन में गायब रात को खुले।

तारे



शीश कटे, तो कपड़ा नापूं,
पैर कटे, तो काग कहाऊं।
पेट कटे, तो बटन लगाता,
पुस्तक और अखबार छपाता।

कागज



रोशनी में साथ है,
अंधेरे में साथ नहीं।
कब साथ छोड़ जाए,
उसका कोई विश्वास नहीं।

परछाई



तीन अक्षर का प्यारा नाम,
पानी देना मेरा काम।
प्रथम कटे, तो दल बन जाऊं,
मध्य कटे, तो बाल कहाऊं।

बादल



हाल-चाल यदि पूछो इससे,
नहीं करेगा बात।
सीधा-सादा लगता है,
पर पेट में रखता दांत।

अनार



प्रथम कटे पूजा में लीन,
मध्य कटे तो कान।
अन्त कटे तो काली देखा,
अक्षर हैं केवल तीन।

कालीन



विद्युत मुझमें जान फूंकती,
मैं लोगों का दिल बहलाता।
सारे जग की बात सुनाता,
अब बोलो मैं क्या कहलाता।

रेडियो



आग लगे मेरे ही बल से,
हर प्राणी के आती काम।
दिन में पौधे मुझे बनाते,
अब बतालाओ मेरा नाम।

ऑक्सिजन गैस



सैर करा सकती मैं नभ की,
कर सकती हूं जग का नाश।
जल सकती मैं बड़े जोर से,
लेकिन जल है मेरा वास।

हाइड्रोजन गैस



झट तम को दूर भगाता,
पर तेल नहीं वह खाता है।
वह सूरज, चांद न तारा है,
आज्ञा का दास तुम्हारा है।

बल्ब



काला तालाब झिलमिला पानी,
उसमें नाचे बुधिया रानी।

पूरी



गोल-गोल चकरी,
गली-गली में रस।
इसका अर्थ बताओ बच्चों,
रुपए मिलेंगे दस।

जलेबी



चलते-चलते पूंछ गंवाती,
नयी पूंछ फिर से पा जाती।
वही तो खुद रहती है नंगी,
पर सबको कपड़े पहनाती।

सुई



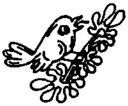
घेरदार है लहंगा उसका,
एक टांग से रहे खड़ी।
करते हैं, सब चाह उसी की,
वर्षा हो या धूप कड़ी।

छतरी



दिल्ली ढूंढा, बम्बई ढूंढा,
फिर पहुंचा कलकत्ता।
एक अचम्भा मैंने देखा,
फल के ऊपर पत्ता।

मक्का



बिल में कभी नहीं वह रहती,
जली-जली रहती हर ओर।
तीन अक्षर में ढूंढो उसको,
फिर पाओगे उसका छोर।

बिजली



हरी गेंद पर गोल नहीं है,
फिर भी वह बेडोल नहीं है।
पकने पर हो जाती पीली,
थी खट्टी अब बड़ी रसीली।

आम



(1)
नाम यदि लो मेरा,
तो मुंह में पानी आ जाता है।
चन्दा जैसी बाकी,
मेरा नाम सभी को भाता है।

(2)


गरमी के मौसम में,
मेरा है उपयोग बड़ा भारी।
मुझे भिगोकर पीते पानी,
चटनी खाते नर-नारी।

इमली



जिन्हें लोमड़ी खा न सकी थी,
लाख पची पर पा न सकी थी।
लटक रहे बन सभी इकट्ठे,
चली गई वह कहकर खट्टे।

अंगूर



छिलके दूर हटाते जाओ,
बड़े मजे से खाते जाओ।
इतना पर जरूर देखना,
छिलके इसके दूर फेंकना।

केला



पेट काट कर पता बनाया,
बिन पांव-सिर पी होता।
बड़े मजे की बात हो गई,
सिर तोड़ा फिर भी पीता।

पपीता



महलों का शहर कहलाता,
वह किस नाम से जाना जाता।

कलकत्ता

गेटवे ऑफ इण्डिया है उपनाम,
भारत के किस नगर का है यह नाम।

मुम्बई



एम्पायर सिटी कहलाता जो,
बताइए कौन सा नगर है वो?

न्यूयार्क



वेनिस ऑफ दी वर्ल्ड कहलाता,
संसार में है उसका किससे नाता।

स्टॉकहोम

पिंक सिटी कहलाता जो,
कौन सा भारतीय नगर है वो ?

जयपुर



सात पहाड़ियों का नगर,
क्या कहते उसको मगर ?

रोम



हरियाली कोठी भारी,
उजली-उजली धरती।
लाल-लाल बिस्तर पर,
काली मछली सोती।

तरबूज



लम्बी सी औरत लगे,
सिर पर बिखरे बाल।
प्रथम कटे तो जूर,
बीच कटे तो गधा।

खजूर



ढाई अक्षर का मेरा नाम,
आती हूं, भोजन करने के काम।
आदि कटे तो होती देर,
अन्त कटे तो बनता खेल।

प्लेट



छांटा जाता पीसा जाता,
काटा जाता बांटा जाता।
इसको पत्ता भी कहते हैं,
यह खाने के काम न आता।

ताश



एक फूल है काले रंग का,
सिर पर वह सुहाता।
तेज धूप वर्षा में खिलता,
छाया में मुर्झाता।

छाता



चांद-सा मुखड़ा गोल-गोल है,
बिन पैरों के चलता।
राजा-रंक सभी को प्यारा,
मेहनत से है मिलता।

सिक्का



एक पहेली बूझो भैया,
सिर को काट दिया री दैया।
नमक लगाकर उसके ऊपर,
डाल दिया झट मुंह के अंदर।

खीरा



तीन अक्षर का मेरा नाम,
दो ही वर्ण आते काम।
प्रथम कटे शान रह जाऊं,



अंत कटे रात बन जाऊं।

निशान

चिन्ता करके हो गए पीले,
सज्जन हैं ये बड़े रसीले।

आम



खुली रात है मेरी माता,
हरी घास है मेरी सेज।
मोती-सा है तन हमारा,
धूप से है परहेज।

ओस



सब्ज पेटी रत्न जड़ी,
मुख तक भरी चम्पाकली।

कटहल



लम्बी नाक, आंख है छोटी,
पांव है मोटा जैसे खम्भा।
टीला जैसा खड़ा हुआ है,
देख-देख होता अचम्भा।

हाथी



मूर्खों को पदवी दी जाती,
रात को मैं देखा करता।
बहुत ही कम मैं उठता हूं।
एक जगह हूं बैठा रहता।

उल्लू



सात गांठ की लंबी लाठी,
गांठ गांठ में रस।
जो कोई इसका अर्थ बताए,
रुपये पाए दस।

गन्ना



तीन अक्षर का मेरा नाम,
दो ही वर्ण आते हैं काम।
जैसा सिर है वैसे पैर,
मैं करता बस जल में सैर।

जहाज



पेट से निकाली,
कमर में मारी।
पलभर में,
फैली उजियारी।

माचिस



एक अनोखी ऐसी चीज,
उजली धरती काला बीज।
जो हैं इससे करते प्यार,
वे बन जाते होशियार।

पुस्तक



तीन पंख का ऐसा पक्षी,
सबके घर में रहता।
वर्षा और सर्दी में सोता,
बस गर्मी में उड़ता।

पंखा



तन है गांठ गठीला,
लगता बड़ा रसीला।

गन्ना



हाथ में लीजै,
देखा कीजै।

दर्पण



एक जानवर ऐसा,
जो हाथ जोड़ कर बैठा।

गिलहरी



लाल-लाल रंग मेरा,
पीठ है लहरेदार।
काटो तो अन्दर मिले,
बैठा पहरेदार।

छुहारा



हमने देखा जहां-जहां,
मिली घूमती वहां-वहां।

नजर



काला रंग है काला घर है,
पीती वह लाल रंग है।

जूं



आलू में हूं, भालू में हूं,
हूं तुम्हारे तालू में।
मई-जून के आते ही,
हो जाती हूं चालू मैं।

लू



पीला-पीला ढीला-ढीला,
चीर दिया तो गीला-गीला।
अन्दर बाहर है चमकीला,
सबको भाता बड़ा रसीला।

आम



हम कहलाते बावन चोर,
हमसे बढ़कर कोई न और।
चाहो तो हम मन बहलाएं,
या कंगाल-दरिद्र बनाएं।

ताश के पत्ते



रोज शाम को आ जाती है,
और सवेरे जाती है।
काली साड़ी पर असंख्य,
जगमग मोती चमकाती है।

रात्रि



हरे रंग की है पोशाक,
बैठा सबसे ऊंची शाख।
कुतर-कुतर फल खाता है,
टें-टें कर उड़ जाता है।

तोता



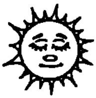
बिना पूंछ का चौपाया,
खाती के घर से आया।
हिले-डुले ना कुछ खाये,
नहीं भार से घबराये।

खाट



हर पल घूमूं,
घूमूं साल महीना।
ग्रह के चारों ओर मैं घूमूं,
यही है मेरा जीना।

उपग्रह



तारा हूं मैं बड़ा विकट पर,
पूंछ है मेरी लम्बी।
सालों बाद दिखाई पड़ता,
है ना बात अचंभी।

पुच्छलतारा



हाथी घोड़ा ऊंट नहीं,
खाए न दाना घास।
सदा हवा पर ही रहे,
होय न कभी उदास।

साइकिल



पानी में जो दौड़ लगाए,
रहे उसी में पड़ी।
जब पानी से बाहर आई,
मरी हुई सी पड़ी

नाव



दो अक्षर का मेरा नाम,
आता हूं, खाने के काम।
बात कहूं मैं बिल्कुल सांच,
मुझे उल्टा कर देखो नाच।

चना



आदि कटे से हूं मैं पशु,
मध्य कटे पर काम।
अन्त कटे तो पक्षी होता,
बोलो मेरा नाम।

कागज



बिन हड्डी का ऐसा राक्षस,
आए आधी रात।
गाना गाए झूम-झूम कर,
सब पर करता घात।

मच्छर



दाना-पानी कुछ नहीं लेती,
रात-दिवस चलती जाती।
पल-पल बड़ा कीमती,
हमको ऐसा सबक सिखाती।

घड़ी



थाली भरी राई,
हमसे गिनी न जाई।

तारे



सूरज से नित आंख मिलाये,
मिलता जुलता नाम धराये।

सूरजमुखी



कहे बीरबल, सुनो अकबर शाह,
रांधे रह हजार बरस, बिना रांधे गल जाय।

ईंट



ढाई अक्षर का मेरा नाम,
उल्टा-सीधा एक समान।
ज्योति जगाना मेरा काम,
करूं प्रभा अनुपम अभिराम।

बल्ब



शीश कटे तो अंग बने,
और पैर कटे तो नाज।
पेट कटे तो मन बने,
कहो पहेली आज।

मकान



पत्थर की नाव पर,
पत्थर एक सवार है।
नाव लेकिन चलती नहीं,
चलता सवार है।

सिल-बट्टा



पानी से पैदा हुई,
पानी से मर जाय।
आग लगाकर फूंक दो,
तब यह अमर हो जाए।

ईंट



गोल-गोल मैं गोल कपोल,
मुझको मुंह में रखते तौल।
मीठे-मीठे मेरे बोल,
नाम मेरा बड़ा अनमोल।

लड्डू



बिना बस्ती का मैं संसार,
पहले सागर अगम अपार।

नक्शा



हर एक को खाऊं मैं,
मुझे न खाए कोय।

दांत



सदा निरन्तर चलता है वह,
नहीं किसी से डरता है वह।
कोई रोक न पाता उसको,
यद्यपि धीरे चला है वह।

समय



रूप दिखाऊं, तुम्हें चिढ़ाऊं,
चेहरे का हर भाव बताऊं।
हकीकत चाहो मुझ में झांको,
ज्यों का त्यों सब कुछ दिखलाऊं।

आइना



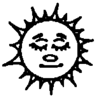
आदि कटे सो तिथि,
अन्त कटे तो अति।
ईश जैसा जानें,
जग में मुझको सुमति।

अतिथि



ठण्डा चाहो, तो आओ,
हिम सुत हूं पहचानो।
घर-घर में बसा हुआ हूं,
बिन बिजली डिब्बा जानो।

रेफरीजरेटर



तीन अक्षरों का नाम है,
सबके मन को मैं भाती।
भोजन मुझको ही जानो,
आदि कटे तो मैं पाती।

चपाती



कर्ण सुमेरू चढ़ इतराऊं,
विशिष्ट दृष्टि का मैं दाता।
मैं हूं तो सब कुछ जग में,
नहीं तो देत दोष विधाता।

चश्मा



अढ़ाई किलो कपास खिला कर,
मुंह मेरा सिल डाला।
सूई से बींधा गया,
पर सर्दी का रखवाला।

लिहाफ



नन्हा सा मैं एक शिकारी,
लिए साज मैं आता।
फोड़ जिस्म को पार निकल लूं,
अगर मैं हंस ना जाता।

मच्छर



गोल गोल से नन्हें फल हम,
जो खाए वो माने।
खाने लगो, ढेर खा जाओ,
स्वाद लोमड़ी जाने।

अंगूर



स्वाद है मेरी सीन्सी....सीन्सी,
मैं छोटी महारानी।
हो हिम्मत तो चख कर देखो,
याद दिला दूं नानी।

हरी मिर्च



उग आऊं मैं धरा पर
बिन डाले कोई बीज।
पशु दूध दें मुझे खाय के
बोलो मैं क्या चीज।

घास



एक मतीरा चमकीला,
दिखता वह पीला-पीला।
छिन-छिन कर घटता जाता,
पन्द्रह दिन में मिट जाता।

चन्द्रमा



नीली चादर एक किसी के,
हाथ न अब तक आई।
फटे-मिटे ना चोरी होए,
सबके ऊपर छाई।

आकाश



धरती से मैं आसमान में जाता हूं,
लौट वहां से फिर धरती पर आता हूं।
खाता-पीता नहीं, नहीं मेरा जीवन,
फिर भी सारे जग का जीवनदाता हूं।

पानी



एक तरह का पाउडर हूं मैं,
मुझे बनाया एस्पडिन ने।
पानी पीकर मैं जम जाता,
भवन बनाने के काम आता।

सीमेंट



आदि कटे तो हे मा मा लन,
मध्य कटे के माने बेन।
अन्त कटे तो बेल लिपट कर,
कभी बिछुड़ती तरुवर से न ।

बेलन



आदि कटे गौना कर जाए,
मध्य कटे शौ भना बने।
अन्त कटो ते भगो-भगो कह
पास बुला लेता अपने।

भगोना



दो पहियों पर चलती है वह,
नहीं चाहिये उसको ईंधन।
नहीं कोई फैलाती प्रदूषण,
आम आदमी का वह वाहन।

साइकिल



चल सकती कच्ची राहों पर,
मुझमें जुतते बैल।
मैं खेती में बड़ी सहायक,
ना बस हूं ना रेल।

बैलगाड़ी



आसमान में उड़े रात दिन,
पर वह नहीं विहंग।
बैठ दूर घूमें कई,
कई देखकर दंग।

हवाई जहाज



बिना पैर पानी पर चलती,
बतख नहीं ना जल की रानी।
उसे न चाहिये सड़क या पटरी,
केवल चाहिये गहरा पानी।

नाव



उड़ नहीं सकती मैं हवा में,
चल नहीं सकती सड़कों पर।
पर मैं लाखों पर्यटकों को,
पहुंचाती हूं इधर-ऊधर।

रेलगाड़ी



समस्त विश्व पर तना हुआ है,
ना आधार न खम्भा।
थाम सितारों को बैठा है,
होता बड़ा अचम्भा।

आकाश



पांव नहीं है पर चलता हूं,
देता नहीं दिखाई।
जब-जब मैंने वेग बढ़ाया,
मच गई चारों ओर तबाही।

तूफान



कागज पर मैं सरपट भागूं,
चल कर थोड़ा सा गिर जाऊं।
गर्दन जरा काट दो मेरी,
तो उठ कर फिर दौड़ लगाऊं।

पेंसिल



सोने की वह चीज है,
बिके न हाट सुनार।
हलकी-फुलकी भी नहीं,
कई किलो है भार।

चारपाई



तीन अक्षर का नाम है,
पानी जैसा रूप।
हवा तो इसकी मौत है,
जीवन-गरमी व धूप।

पसीना



अजीब हूं काला डिब्बा,
बात नहीं गम्भीर।
मैं जादूगर कौन हूं,
ले लेता सबकी तस्वीर।

कैमरा



एक नारी की सुनो कहानी,
मीलों लम्बी काया।
टेढ़ी-मेढ़ी कमरिया जिसकी,
उत्तर दो, क्या समझ में आया।

सड़क



निज आंसुओं पर खड़ी रहे जो,
सिर पर आग जलाये।
रोशनी हमको देती वह,
पर आंसू खूब बहाये।

मोमबत्ती



हाथी, घोड़े, ऊंट सिपाही,
राजा, मंत्री करे लड़ाई।
बिना शस्त्र के हैं सब लड़ते,
छूटे नहीं परस्पर अड़ते।

शतरंज का खेल



कपड़े, बाल बनाती है वह,
खाती नहीं, कतरती है वह।

कैंची



वरदी पहन, उठाकर थैला,
नियत समय पर वह चल देता।
गली-गली, घर-घर जाकर के,
जिसका हो उसको दे देता।

डाकिया



गहरा भी हूं स्थिर भी हूं,
लेकिन हलचल मेरे स्वभाव में।
सारी नदियों को पीता हूं,
बादल छोड़ूं श्वास-श्वास में।

समुद्र



आया है रत्नाकर से,
अब पड़ा हुआ बाजार।
खाते उसको सभी,
बिना उसके भोजन बेकार।

नमक



खाता-पीता नहीं कभी कुछ,
तन है मुट्ठीभर का।
दिन या रात कभी भी वह,
बन जाता रक्षक घर का।

ताला



दुनिया में मैं सबसे बड़ा,
बैठूं नहीं, रहूं मैं खड़ा।
टकराते मुझसे अनेक पर,
मैं न किसी से कभी लड़ा।

हिमालय



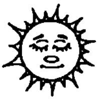
नाजुक बेल रहे छाया में,
कोमल उसकी काया।
उसके पत्ते ने दुनिया में,
खूब मान है पाया।

चंपा



सांप्रदायिकता मिटाने वाला,
हुआ धर्मान्धों का शिकार।
जेल गया औ लाठियां खाईं,
हम सब करें उसका सत्कार।

गणेश शंकर विद्यार्थी



अंत कटे खेत बन जाऊं
प्रथम कटे में तड़ी।
तांबे के लिए प्रसिद्ध हूं
मैं कौन-सी नगरी।

खेतड़ी



काला है पर कौआ नहीं,
पक्का है पर पत्थर नहीं।
गाड़ी खींचता है पर बैल नहीं,
धुआं फेंकता है पर चूल्हा नहीं।

इंजन



मैं भारत का बंदरगाह हूं,
बोलो मैं हूं कौन?
प्रथम कटे तो चीन बन जाऊं,
मध्य कटे मैं कोन।

कोचीन



प्रथम कटे रेली बन जाऊं.
मध्य कटे चढ़ जाऊं भेंट।
मैं हूं एक नगर भारत का,
रामगंगा की भेंट।

बरेली



बचपन में थी सीधी-साधी,
बुढ़ापा आते ही रंग हुआ लाल।
अगर कभी कोई खाये मुझको,
बस हो जाता उसका बुरा हाल।

मिर्च



घेरदार लहंगा पहन कर,
एक टांग पर खड़ी हूं।
याद सबको मेरी तब आती,
धूप-बरसात जब है आती।

छतरी



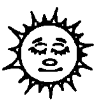
एक अजगर की अजब कहानी,
जिसकी लम्बी काया।
घर-घर उगले ठंडा पानी,
इसका भेद कोई समझ ना पाया।

पाइप



पांच अक्षर का मेरा नाम,
उल्टा सीधा एक समान।

नवजीवन



हरे वस्त्र हैं, मुखड़ा लाल,
हाथ न आता बड़ा कमाल।

तोता



ठंडी हवा संदेश लाती,
तब मैं हूं धरती पर आती।
बच्चों के मन को अति भाति,
किसानों को भी खूब सुहाती।

वर्षा



दूर-दूर तक नजर डालकर,
खाने का पता लगाए।
सबसे ऊंचा उड़े गगन में,
मरा पशु ही खाए।

गिद्ध



करता है आरंभ सुबह में,
बेमतलब चिल्लाना।
मुकुट लगाकर ढूंढ रहा,
कूड़े-करकट में खाना।

मुर्गा



छज्जे पर बैठा वह,
गाता है गाना।
भोला है, भीरु है,
खाता है दाना।

कबूतर



काले कपड़े, कड़वी बोली,
स्वयं चतुर कहलाता है।
पाल पराए बच्चों को वह,
मूरख भी बन जाता है।

कौआ



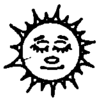
संगीतज्ञ और साहित्य प्रेमी,
किया कला से पूरा प्यार।
अस्सी घाव लगे तन पर,
पर कभी न मानी अपनी हार।

महाराणा सांगा



रस्सी जैसी पूंछ लिए है,
बिना सींग का चौपाया।
उधम मचाने बस्ती में वह,
जंगल से दौड़ा आया।

लंगूर



दो अक्षर की मैं कहलाऊं,
पकड़े तो हाथ न आऊं।
जल थल नभ में मेरा वास,
रहती हूं मैं सबके पास।

हवा



एक पेड़ की बारह शाखा,
हर शाखा की टहनी तीस।
एक-एक टहनी के ऊपर,
होते हैं पत्ते चौबीस।

**एक वर्ष, बारह महीने,
तीस दिन और चौबीस घण्टे**



बड़ी चले बारह कदम,
छोटी चले एक।
हाथ या दीवार पर,
मेज पर देख।

घड़ी



लाल डिबिया पीले खाने,
भीतर छिपे मोती के दाने।

अनार



छोटी सी कोटरी,
जिसमें ना इंसान।
फिर भी करे,
सदा गाने का काम।

रेडियो



हर घर में दिखता हूं,
बच्चों को खूब भाता हूं।
सबका मैं बना मामा,
लेकिन हाथ किसी के ना आता।

चन्दा मामा



पांवों में कीलें गढ़वा इठलाता कौन?
लोहा मुंह में दबा, दौड़ लगाता कौन?

घोड़ा

पूंछ पीठ पर टांगें आठ,
ढोती माल उठाती बाट।

तराजू



बीसों का सिर काट लिया,
न मारा न खून किया।

नाखून



देखी एक अनोखी नारी,
गुण हैं उसमें सबसे भारी।
पढ़ी-लिखी नहीं अचरज आवैं,
जीना-मरना तुरंत बतावें।

हाथ की नाड़ी



मुंह से लेकर किया इकट्ठा,
गुड़-शक्कर से भी वह मीठा।

शहद



मिलता है वह भैंस-गाय का,
दूध नहीं पर, बड़ा जायका।

घी



सुन लो नानी कहे कहानी,
लकड़ी में है मीठा पानी।

गन्ना



घुलनशील वह चिकना, सख्त;
देते हैं जंगल के दरख्त।

गोंद



बारह महीने काम में आता,
आग की मैं लपटों में तपता।
सबकी हूं मैं सेवा करता,
लेकिन सुख-दुख सब मैं सहता।

तवा



प्रथम कटे जंगल बन जाऊं,
अंत कटे मैं जीव।
मध्य कटे बन जाता हूं,
घोड़े उपर जीन।

जीवन



फर-फर, फर-फर चलता हूं,
सबको अच्छा लगता हूं।
गर्मी दूर भगाता हूं,
जीवन सफल बनाता हूं।

पंखा



गर्मी में विश्राम न करता,
सर्दी में स्थिर रहता।
उल्टा छत से लटके रहता,
मुंह से कुछ न कहता।

पंखा



धूल उड़ाती, पेड़ झुकाती,
इधर-उधर वह आती जाती।
धीमी कभी, कभी तेज वह,
चले निरन्तर नजर न आती।

हवा



है पहाड़ से सागर तट तक काया।
चले निरन्तर बड़ी अनोखी माया।

नदी



अंतरिक्ष में
जाना सचमुच
कितना अद्‌भुत काम,
कौन भारतीय
पहले पहुंचा
जरा बताएं नाम।

राकेश शर्मा



बिना पेड़ के हैं वे पत्ते,
सारे बच्चे जिन्हें समझते।
कभी हारते, कभी जीतते,
हैं सब उनको गिनते-गिनते।

ताश



राजा के संग मंत्री हैं,
ले दो-दो घोड़े, हाथी ऊंट।
एक-एक इन सबके आगे,
खड़े हुए सैनिक रंगरूट।

शतरंज के मोहरे



बिना बाल की पूंछ लिये
वह भाग रहा है,
सब सोते वह रात-रात भर जाग रहा है।
काट-काटकर कागज कपड़े
खुश होता है,
और धरातल के नीचे घर में सोता है।

चूहा



बहुत ज्ञान रखती हूं लेकिन,
मुंह से कभी न कहती हूं।
जो मुझको आदर से देखे,
उसको मैं सब देती हूं।

पुस्तक

बिना ड्रेस के द्वारपाल बन बैठ गया है।
टुकड़ों से भर पेट जमीं पर लेट गया है।

कुत्ता



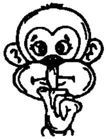
एक नार के दो हैं बेटे,
दोनों ही रहते हैं लेटे।
चले अगर तो एक अकेला,
दोनों का संग है अलबेला।

चक्की के पाट



तीन अक्षर का मेरा नाम,
वन-उपवन है मेरा धाम।
मध्य कटा तो बनी लड़ी,
आदि कटे पर कड़ी-कड़ी।

लकड़ी



एक पुरुष है नारी चार,
सबमें है आपस में प्यार।
ज्ञानी के मन में झट सूझे,
हाथों हाथ पहेली बूझे।

एक अंगूठा चार अंगुलियां



तीन अक्षर का मेरा नाम,
सबसे ऊंचा मेरा मान।
मध्य कटे तो रहूं पड़ी,
आदि कटे तो बस गाड़ी।

पगड़ी



दो बहिने बिल्कुल एक जैसी,
दांये-बायें हाथों में रहती।
तन पर अपने धागा बांधे,
एक दूजे के घर में घुसती।
जब तक रहती डोर गेंद में,
अलग नहीं ये हो पाती।

ऊन सलाई



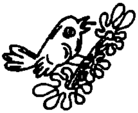
माटी में जीवन पाती,
भूमि में मैं रहती।
किन्तु जब दाने पा जाती,
घानी में पीसी जाती।

मूंगफली



बास के अस्थि-पंजर मेरे,
कागज की है खाल।
डोर सवारी भईया मेरी,
हवा के रुख संग चाल।

पतंग



तीन अक्षर का नाम छोटा सा,
दिखने में बिल्कुल पतला सा।
जो भी मेरे सामने आता,
सच्चा रूप दिखाता उसका।

आईना



लाल रंग स्थूल काय,
निर्बाध यह आये-जाये।
ज्वाला जब भड़क उठे,
तब याद इसी की आये।

दमकल गाड़ी



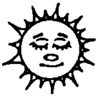
एक कांपती रहती थर-थर,
दूजी रहे पसीने से तर।
और तीसरी हरदम रोती,
बोलो ये तीनों क्या होती?

सर्दी, गर्मी और वर्षाऋतु



दौड़ रही दो इन्च जमीं पर,
गोल-गोल दो पांव।
जहां-तहां मिल जाती नित,
डगर-डगर, और गांव।

साइकिल



आता सुबह, शाम को जाता,
कभी न घर का पता बताता।

सूरज



नौ-नौ काली-गोरी सखियों ने,
मिलकर घेर ली रानी।
आयेगा जब कोतवाल,
तो याद आएगी नानी।

कैरम



हिले-डुलेगा नहीं कभी,
ना कुछ भी लेगा।
चोटी पकड़ मरोड़ो,
तुरत घड़ा भर देगा।

नल



काली-काली उसकी वर्दी,
धीमी उसकी चाल।
हर घर में वह फिरे घूमता,
जैसे हो कोतवाल।

कौआ



देखी एक अनोखी वर्षा,
हाथी खड़ा नहाए।
बहे न पानी प्यास बुझे ना,
धरती भीगी जाए।

ओस



जल पीते ढल जाय उम्र, पवन पाय पल जाय।
पके सेव सारंग और रवि सा तेज सुहाय।

आग



जल थल दोनों में रह लेता,
उसे न मेंढक जानों।
उसका घर फौलादी चादर,
सोच समझ बखानों।

कछुआ



तीन अक्षर का मेरा नाम,
सब लोगों के आता काम।
आदि कटे तो रहूं पड़ा,
मध्य कटे तो बनूं कड़ा।

कपड़ा



बैठ तार में आती वह,
घर के दीप जलाती वह।
कई मशीनों का वह प्राण,
बोलो क्या कहलाती वह।

बिजली



पांच अक्षर का मेरा नाम,
आती मैं बोली में काम।
उलटा सीधा एक समान,
बूझो बच्चों धर कर ध्यान।

मलयालम



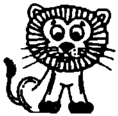
प्रथम दो अक्षर होते हार,
नहीं वह तबला या सितार।
अंतिम तीन वर्ण नियम,
कहती रहती सा रे ग म।

हारमोनियम



खाते हैं संसार सकल में।
लेकिन नजर न आता जल में।

नमक



नहीं लकड़ी न केरोसीन,
नहीं चाहिये आग।
सिर्फ धूप में रख दो बस,
तैयार रोटी साग।

सौर चूल्हा



रंग-बिरंगे कभी जेब पर लटक रहे,
तरह-तरह के कभी मेज पर भटक रहे।
पढ़े लिखों का वह सहचर,
मिल जाएगा घर-घर।

पेन



मुझे खरीदो तो रंग काला,
लो काम में तो रंग लाल।
बचे भाग का रंग सफेद,
बूझो नाम, बखानों हाल।

कोयला



एक डिबिया छोटी सी सबको,
दिशा ज्ञान करवाती।
भटके हुए नाविकों को वह,
सही मार्ग बतलाती।

कुतुबनुमा



भीड़ भड़क्का शोर शराबा,
दिन भर चलता रहता है,
चाट मिठाई खेल खिलौने,
लगता जैसे मेला है।
कहीं बंदरियां नाच दिखाए,
कहीं पर जादूगर के खेल।
मोटर, रिक्शा, घोड़ा-गाड़ी,
कहीं बुलाती छुक-छुक रेल।
बोलो बच्चों क्या है यह-
सर्कस मेला हाट नहर।
नहीं-नहीं यह तो है.....।

शहर



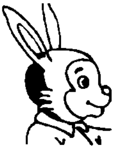
गेहूं मक्का तिलहन,
दलहन जिनसे हमको मिलते हैं।
मधुर-मधुर फल,
सुन्दर-सुन्दर फूल जहां पर खिलते हैं।
काली, भूरी, दोमट,
बलुई जिसकी मिट्टी उर्वर है।
कृषक सींचते श्रम सीकरों से,
हम सब जिस पर निर्भर हैं।
बोलो बच्चों क्या है यह-
बाग बगीचे जंगल रेत।
नहीं-नहीं यह तो है.....।

खेत



कालू काका खेत जोतता,
भंवरू भैंस चराता है।
नहीं झगड़ते अब्दुल-आनन्द,
इनमें गहरा नाता है।
कल-कल नदियां, ताल तलैया,
हरे भरे हैं, खेत खड़े।
गायें, भैंसें, भेड़, बकरियां,
घोड़े, गदहे, ऊंट बड़े।
बोलो बच्चो क्या है यह-
स्वर्ग नरक सागर या नाव।
नहीं-नहीं यह तो है....।

गांव



लम्बे लम्बे वृक्ष,
सुहानी छाया मन में मोद भरे।
झरझर झरनों की स्वर लहरी,
सारा आलस दूर करे।
हाथी चीते शेर विचरते,
पक्षी करते हैं कलरव।
खनिजों जड़ी बूटियों का घर,
रहता जहां रोज उत्सव।
बोलो बच्चों क्या है वह-
वृक्ष नदी झरना या धन।
नहीं-नहीं यह तो है.....।

वन



चूल्हे के सिर चढ़ बैठूं मैं,
और नाक से छोड़ूं भाप।
नियत समय पर सीटी बजती,
पकती सब्जी अपने आप।

प्रेशर कुकर



समझ लो मुझको उल्टा छाता,
पर बारिश में काम न आता।
मनोरंजन के द्वार खोलता,
टी.वी. से मेरा है नाता।

डिस्क एंटिना



चौराहे के बीच खड़ा मैं,
करूं आंख से विभिन्न
इशारे।
समझ उन्हें कुछ आगे बढ़ते,
रुक जाते कुछ सड़क किनारे।

ट्रैफिक सिगनल



बाहर से है रंग बिरंगी,
अंदर से है काली।
ज्यों चलती त्यों होती छोटी,
इसकी चाल निराली।

पेन्सिल



कहीं-नहीं मैं आता जाता,
दरवाजे से मेरा नाता।
ना कुत्ता ना चौकीदार,
कहलाता मैं पहरेदार।

ताला



जंगल मेरी जन्मभूमि है,
महफिल मेरा धाम।
सबके होंठ लगकर देती,
सरगम का पैगाम।

बांसुरी



दो अक्षर का नाम है मेरा,
लेकिन पैर है चार।
उन पैरों से चल नहीं पाता,
बूझ पहेली हो तैयार।

खाट



आग नहीं है, दीप नहीं है,
नहीं चांद और तारे।
घनी रात में चमक रहे हैं,
लगते कितने प्यारे।

जुगनू



हरे रंग की बिछी हुई है,
जल पर एक निराली चादर।
उस पर बैठा हुआ मनोहर,
हंसता हुआ सितारा आकर।

कमल



दौड़-दौड़कर,
दूर समन्दर से आती है।
और किनारे,
पर आकर के खो जाते हैं।

लहरें



भीतर-बाहर, नीचे-ऊपर,
विद्यमान रहती कण-कण पर।
इधर-उधर वह आती-जाती,
नजर किसी को कभी न आती।

हवा



वे धरती पर सदा विचरते,
वे घूमा करते आकाश।
देख एक-दूजे को दोनों,
देते रहते हैं आवाज।

मोर और बादल



एक नार सिर पर चढ़ जाती,
अपने सब दांतों से खाती।
टूटे दांत काम नहीं आती,
घर से तुरंत निकाली जाती।

कंघी



एक अनोखा तानाबाना,
कपड़े सा जाना पहचाना।
बिन सुई के वह सिल जाता,
लेकिन कभी न पहना जाता।

मकड़ी का जाला



वायुयान की
दिशा-क्षेत्र का,
होता हमको ज्ञान।
नाम बताएं
यंत्र का,
जरा लगाकर ध्यान।

राडार



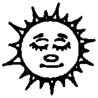
तीन अक्षर का मेरा नाम,
बगिया उपवन मेरे धाम।
मध्य कटे तो कहता सुन,
आदि कटे तो जाता मन।

सुमन



रस से भरी लबालब लाठी,
मारपीट में काम न आती।
शक्कर की दादी कहलाती,
बड़े चाव से चूसी जाती।

ईख



सिलबट्टे पर कभी पीसते,
कभी कुचलते मूसल भारी।
रक्त से कौलेस्ट्राल हटाती,
हृदय रोग में हूं गुणकारी।

लहसुन



पहले ओढ़ी हरी चुनरिया,
हो गया फिर रंग लाल।
जिस सब्जी के रही साथ में,
कर दिया उसे निहाल।

मिर्च



ज्यों चाकू से कटता जाता,
समीप खड़ों को खूब रुलाता।
हर सब्जी में जान डालकर,
उसको खुशबूदार बनाता।

प्याज



भूमि के भीतर बढ़ता हूं,
गोल-गोल है काया।
हर सब्जी का साथ निभाकर,
सबके मन को भाया।

आलू



धरती से उठा,
आसमान से फूटा।
बिखर-बिखर आया,
धरती ने लूटा।

बादल



वह आता तो वे छिप जाते।
वह जाता, वे फिर आ जाते।

सूरज और तारे



मुझसे बहुत बड़ा है लेकिन,
मुझ तक पहुंच न पायेगा।
पार करूंगी मैं मंजिल,
वह उसमें ही दब जायेगा।

सूई-धागा



कभी-कभी आता, तम का विजेता।
सूरज से लेता, धरती को देता।
लम्बी टांगें, लम्बी गर्दन,
ढूंढ रहा पानी में भोजन।

चन्द्रमा



प्रथम कटे तो काम कहलाऊं,
मध्य कटे तो मन कहलाऊं ।
परिवार की करूं सुरक्षा,
वर्षा, आंधी, धूप से रक्षा।

मकान



प्रथम कटे तो मल हो जाता,
अंत कटे तो कम।
कीचड़ बीच खड़ा मुस्काता,
लक्ष्मी का आसन।

कमल



मध्य कटे तो बाल कहाता,
प्रथम कटे तो दल हो जाता।
आसमान में उमड़-घुमड़ कर,
बरस धरा की, प्यास बुझाता।

बादल



प्रथम कटे पानी कहलाऊं,
अंत कटे तो काज।
मध्य अगर काटोगे मेरा,
बन जाऊं यमराज।

काजल



प्रथम कटे तो जल जाती हूं,
मध्य कटे तो म्याऊं ।
वर्षा में बादल संग रहती,
मैं क्यों नाम बताऊं ?

बिजली



रंग-बिरंगी पंखों वाली,
सजी हुई जैसे दुल्हन।
वह परियों की पटरानी सी,
देश है उसका कोई उपवन।

तितली



मेघ देखकर नर्तन करता,
मेघ देख हर्षाता है।
वह मेघों को टेर लगाकर,
धरती पर बुलवाता है।

मोर



ताल तलैया ज्योहीं भर जाए,
गीत सुनाता टर-टर-टर।
देर रात में इनको सुनकर,
अच्छे-अच्छे जाते डर।

मेढ़क



टिम-टिम-टिम-टिम खूब चमकते,
लगता जैसे हों तारे।
छोटे-छोटे ये बिजली घर,
सब कीटों से है न्यारे।

जुगनू



तूं-तूं-तूं-तूं कह कान पर,
पहले दस्तक देता है।
फिर शरीर के किसी अंग पर,
चुपचाप डस लेता है।

मच्छर



गोल, सफेद जैसे अंडा,
खाने में मीठा, ठण्डा।
फटे दूध का बड़ा कमाल,
नाम बताओ प्यारे लाल।

रसगुल्ला



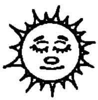
नाम फल का,
भार हल्का।
मसालेदार,
बतला दो यार।

सेव



तीन कोण हैं, तीन भुजाएं,
भरा मसाला पेट।
अभी गरम है फिर खा लेना,
कर लो थोड़ी वेट।

समोसा



गेंद बनाई,
और पकाई।
घी में डुबो,
निकाली खाई।

बाटी



गोल-गोल चकरी,
चकरी में चक्कर।
बिना किसी मुंह के,
पी गई शक्कर।

जलेबी



जन्म हुआ उसका जंगल में।
नाच रही वह गहरे जल में।

नाव



एक छिपकली ऐसी बल में।
मात करे हाथी को जल में।

मगर



उलझी हुई जड़े दल-दल में।
ऊपर पुष्प, तना है जल में।

कमल

बिन जल के मर जाती पल में।
एक परी जो रहती जल में।

मछली



मोती, मनकों में घुस जाता,
चुन-चुन फूलों को लटकाता।
टूक-टूक जो होता कपड़ा,
उसे जोड़ फिर एक बनाता।

धागा



उसने बांध लिया है हाथ।
रहती है वह हरदम साथ।

हाथ की घड़ी



पीती तरल, उगलती गैस,
चली दीवानी अपने देश।
संग मुसाफिर को ले जाती,
अपनी मंजिल पर पहुंचाती।

मोटरगाड़ी



लम्बा लगभग मीटर एक,
दिया उसे दीवार पर टेक।
अंधकार हरता वह डंडा,
गरम रात को, दिन में ठंडा।

ट्यूबलाइट



चला निगलकर कागज जैसा।
जा उगला वैसा का वैसा।

लिफाफा



भूरा-भूरा रंग है मेरा,
मोटी मेरी खाल।
भरा पेट में पानी,
ऊपर है बालों का जाल।

नारियल



रहे हाथ में हरा-हरा वह,
मुंह में जा हो जाए लाल।
नहीं मिठाई न वह फल है,
जो जाने बोले तत्काल।

पान



धड़ खोया तो मन मिला,
सिर खोया तो कान।
पैर काट उलटा किया,
काम बना पहचान।

मकान



एक हाथ की काया उसकी,
मुंह हैं उसके आठ।
नहीं जीभ फिर भी वह बोले,
तन है पूरा काठ।

बांसुरी



खरीदने पर हरा,
खाने पर लाल।
बोलो मित्रों ऐसा,
करता कौन कमाल।

पान



बिना बुलाए डाक्टर,
आधी रात में आता है।
गाना सुना-सुना कर.
इन्जेक्शन मुफ्त में लगाता है।

मच्छर



एक बार भोजन
सबको खूब कराती।
दुबारा चाहने पर,
नहीं काम में आती।

पत्तल



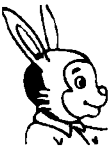
छः अक्षर का मेरा नाम,
आता हूं खाने के काम।
फूल फल मिठाई कहलाता,
सबके मुंह में पानी लाता।

गुलाबजामुन



भर कर पेट मनुष्यों से वह.
ऊंची उठती।
गुर्राती हुई न जाने,
कहां पहुंचती।

हवाई जहाज



ना मन्दिर, ना मस्जिद, गिरजा
होती नहीं अर्चना-पूजा!
उस जैसा बच्चों का हित कर
नहीं धर्म-स्थान है दूजा।

विद्यालय



दानें, कीट–पतंगे खाता।
बड़े सवेरे वह चिल्लाता।

मुर्गा



बांध कलाई रहती साथ।
मन ही मन में करती बात।

कलाई घड़ी

मोती की वह फसल काटता,
बड़े सवेरे।
और शाम को है समेटता,
अपने डेरे।

सूरज



बड़ी देर से आती है और,
जल्दी भग जाती है।
जब तक रहती आंगन में,
सबके मन को भाती है।

धूप



दो अक्षर का मेरा नाम,
आती हूं पीने के काम।
इस युग का अमृत कहलाती,
ज्यादा उगती हूं आसाम।

चाय



तीन अक्षर का मेरा नाम,
रोज रात को आती काम।
सर्दी में तो बिन मेरे,
हो जाता आराम–हराम।

रजाई



ओढ़े, पहने, बांधे, बिछाए।
गर्म नहीं पर गर्मी लाये।

ऊनी वस्त्र



सात रंग की चटाई,
नभ में पड़ी दिखाई।
देखते-देखते उड़ गई,
हाथ किसी के न आई।

इन्द्रधनुष



जिसको यह मिल जाती,
मन उसका जाता खिल।
तुम बताओ इसका नाम,
मैं जरा गया हूं भूल।

सफलता



तीन अक्षर का मेरा नाम,
आती हूं खाने के काम।
सब मुझे चाव से खाते हैं,
फिर भी भूखे रहते हैं।

कसम



वर्षा ऋतु में हूं आता,
रंग मेरा है काला।
चार माह का जीवन मेरा,
बूझो कौन मैं निराला।

बादल



आकड़ बाकड़ बेलड़ी
कली-कली में रस

जलेबी



युग-युग से है उपासक,
गैती और कुदाली का।
धरती का तल चीर,
लिखता है गीत खुशहाली का!

किसान



उछलकूद कर मन बहलाता
फिर भी सबकी ठोकर खाता
बिना हवा के चल नहीं पाता
फिर भी मैं निर्जीव कहलाता।

फुटबाल



नन्हीं नटखट देखी जान,
धारीदार पीठ पहचान।
दोनों हाथों से वह खाये,
डाली-डाली दौड़ लगाये।

गिलहरी



तीन चार घेरों की चकरी,
पीला उसका रंग।
पोर-पोर उसका रस भीगा,
खाओ दूध के संग।

जलेबी



पहले हरी और फिर लाल,
देखा हमने एक कमाल।
इसके बिना रसोई सूनी,
नीरस व्यंजन सब्जी दाल।

मिर्च



सात दिन में हूं आता,
बच्चों का हूं चहेता।
वे करते हैं मुझसे प्यार,
रोज करते हैं मेरा इंतजार।

रविवार



देखने वाला पहन नहीं पाए,
पहनने वाला देख नहीं पाए।
इस अजीब चीज का नाम बताओ,
बुद्धिमान होने का सबूत पाओ।

कफन



समाचार लाता हूं प्रातः,
नहीं लगाता देर में।
फेक दिया जाता हूं,
दूजे दिन रद्दी के ढेर में।

अखबार



आती है वह रात को,
जाती है प्रभात को।

नींद

मेला को हटा दिया,
वहां और कुछ लगा दिया।
अब उसको तुम लेलो जी,
खा लो फिर तुम खेलो जी।

केला



अपनी जगह से,
कहीं नहीं वो जाता है।
लेकिन यहां की सारी बातें,
वहां तक पहुंचाता है।

टेलीफोन



बाजार में मिले,
तो हर कोई खाए।
परीक्षा में जो मिले वो,
किसी को न भाए।

लड्डू



जादूगर एक निराला,
ऐसा जादू करता वो।
बाएं को दायां, दाएं को बायां,
एक को करता दो।

आईना



धूप लगे पैदा हो जाए,
छांह लगे मर जाए।
करे परिश्रम तो भी उपजे,
हवा लगे मर जाए।

पसीना



एक बगिया में फूल अनेक,
उन फूलों का राजा एक।
बगिया में जब चंदा आए,
बगिया चम-चम खिल-खिल जाए।

आकाश में चंद्रमा



हरा मुकुट वह पहने आई,
फिरती फूली-फूली।
गोरा रंग है नाम बताओ,
बात बड़ी मामूली।

मूली



पगरी में भी, गगरी में भी,
और तुम्हारी नगरी में भी।
कच्ची खाओ, पक्की खाओ,
सिर में मेरा तेल लगाओ।

नारियल



बदन है जिसका लंबा-लंबा,
मुंह है कुछ-कुछ गोरा।
पेट में जिसके काली डंडी,
नाम लिखे वो मोरा।

पेंसिल



देश देखा, प्रदेश देखा,
और देखा कलकत्ता।
एक अचंभा हमने देखा,
फूल के ऊपर पत्ता।

गोभी



हरी-भरी है मेरी काया,
चार अक्षर का नाम है पाया।
छूते ही कुम्हला जाती हूं,
बतलाओ क्या कहलाती हूं।

छुई-मुई



है पानी का मेरा चोला,
हूं सफेद आलू सा गोला।
कहीं उलट यदि मुझको पाओ,
लाओ-लाओ कहते जाओ।

ओला



दो दुबले कोल्हू के बैल,
दोनों पड़े कांच की जेल।
चक्कर बारह बार लगाएं,
लेकिन जेल से निकल न पाएं।

घड़ी की सुइंयां



घेरदार घाघरा, गुमानदार बूंटी।
रावले में जाते ही कामदार कूटी

मिर्च



हरी थी मन मरी थी,
राजाजी के बाग में
दुशाला ओढ़े खड़ी थी।

मक्का



तू चल
मैं आया

किंवाड़



छोटी सी तलाई
जिसमें नहाए गुट्टा नाई।

पुआ



छोटा सा गिलास
उसमें बैठा रामविलास

बादाम



यहां नहीं वहां नहीं,
लंदन के बाजार नहीं।
छीलो तो छिलका नहीं,
चूसो तो घुटली नहीं।

ओला



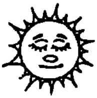
काली चट्टान पर
फूल खिले

तारे



सेठ के पेट में
सेठानी नाचे।

ताला-चाबी



सेठजी के पेट में
दांत उगाओ

अनार



चार खूंट चौबीस नगाड़े
जिस पर बैठे दो बंजारे ।

चांद-सूरज



मुकुट शीश पर सुन्दर सोहे,
मेघ देखकर वह नाचे।
खूब सजाये पैसे तन पर,
बन उपवन की शोभा बढ़ाये॥

मोर



गोरी सुन्दर पातली, केसर काले रंग।
ग्यारह देवर छोड़ के, चली जेठ के संग॥

अरहर



एक नार जाके मुंह सात,
सो हम देखी बेंडी जात।
आधा मनुष्य निगले रहे,
आँखों देखी सभी कहे॥

पैजामा



मकान खंड है उसका नाम,
बूढ़ों के वह आता काम।
फैशन के भी काम में आता,
जो देखे वह नाक चढ़ाता॥

चश्मा



प्रीतम जाओ शिकार को,
लाओ ताजा मांस।
आपके ऐसा लाइयों,
होवे वृहत्तिस दांत॥

मछली



तीन पत्र हम भेजकर,
विनय करी त्रिपुरारि।
भक्ती हमको दीजिये,
भोले अरु कामारि॥

बेलपत्ती



पत्थर वाली सेज पर सोती,
कम्बल ओढ़े काली।
शहर गांव में चक्कर काटे,
बिना मुंह की नागिन काली॥

सड़क



घट जैसा एक रूप बनाया,
मोतियन छुपाकर हजार।
शोभा बढ़ाये राज बाग की,
चलकर आये वह बाजार॥

दाड़िम



भाग्य माता है नहीं,
लिखती सभी का लेख।
हाथों हाथ चलती है,
रखे लोगों का नाम विवेक॥

कलम



मुख की शोभा अंकों से,
बड़े छोटे दो हाथों से।
अंक देख लोग अर्थ निकाले,
काल की हर बातों से॥

घड़ी



वह देखा, पर मोर नहीं था,
बंधते देखा, पर चोर नहीं था।
मुंह में रखा, पर कौर नहीं था,
हुआ लाल, पर खून नहीं था।

पान



हरी टोपी, काला बाना,
सिर पे बैठ शहर को जाना।
गली-गली में शोर मचाना,
अच्छा लगता इसको खाना।

बैंगन



पूंछ कटे तो सीता,
सिर कटे तो मित्र।
मध्य कटे तो खोपड़ी,
पहेली बड़ी विचित्र।

सियार



ठंडी हवा संदेश लाती,
तब मैं हूं धरती पर आती।
बच्चों के मन को अति भाति,
किसानों को भी खूब सुहाती।

वर्षा



बसी पेड़ पर काशी नगरी,
नीचे उसका द्वार।
हवा चलने पर है हिलती,
बूझो बच्चों सार।

बया का घोंसला



बिना पैर सरपट भागे,
सब सुनता बिन कान।
जो छेड़े, छोड़े नहीं,
हर लेता है प्राण।

सर्प



बिना पंख उड़ चला,
आसमान को जाता।
उड़त-उड़त थकता नहीं,
प्राण चले ही जाता।

धुआं



बड़ा भाई तेज भागता,
छोटा भाई धीरे।
अंत समय जब दोनों मिलते,
छोटा भाई नीचे।

घड़ी की सूइयां



बड़े चले बारह कदम,
छोटी चले एक।
हाथ या दीवार पर
मेज पर देख।

घड़ी



एक पेड़ की बारह शाखा,
हर शाखा की टहनी तीस।
एक-एक टहनी के ऊपर,
होते हैं पत्ते चौबीस।

वर्ष



जब तक था स्वच्छन्द, किया था,
फल-फूलों का काम तमाम।
बन्द हुआ कारागृह में तो,
याद आया अब राम-नाम।

भंवरा



बार-बार प्रत्येक सातवें दिन आ जाता।
आते ही विद्यालय से छुट्टी करवाता।

रविवार



चलते-चलते शब्द सुनाती,
कभी नहीं नजरों में आती।
सथ रहे वह कहीं नजाती,
चली-चली दुनिया कहती।

हवा



पैर कटे तो नग बने,
सिर कटे तो गर।
कट जाये यदि कमर तो,
बन जाये वह नर।

नगर



मध्य कटे तो भोजन बनता,
अंत कटे से वजन हो जाता।
विश्व का एक देश जानो,
अब तो मुझे पहचानो।

भारत



एक महल है कागज वाला,
जिसमें बैठे पहरेदार पचास।
एक निकाल कर रगड़ डालो,
झट फैले हर और प्रकाश।

माचिस



तीन अक्षर का मेरा नाम,
आता हूं घर-घर में काम।
प्रथम कटे तो द्वार बन जाता,
अंत कटे तो चांद कहलाता।

चादर



दो अक्षर की मैं कहलाऊं,
पकड़े तो हाथ न आऊं।
जल थल नभ में मेरा वास,
रहती हूं मैं सबके पास।

हवा



न खाती है न पीती है।
मारो तो चिल्लाती है।

ढोलक



कपड़े, बाल बनाती है वह।
खाती नहीं कतरती है वह।

कैंची



चलता तो कागज पर चलता।
रूकता तो अपना मुंह ढकता।

पैन



सिर कटने पर मल हो जाऊं,
पेट कटे तो कल।
मेरा नाम बता दे जल्दी,
या फिर आगे चल।

कमल



उपकरण साधारण सा लगता,
दूध से है इसका नाता।
बतलाओ तो उसका नाम,
शुद्धता ज्ञात करना जिसका काम।

लैक्टोमीटर



ऐसी एक कली बतलाओ,
नहीं कभी जो खिलती।
बिना पाले ही पलती है वह
घर-घर में है मिलती।

छिपकली



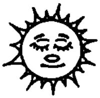
लाल लाल है गोल मटोल,
नहीं है उसका महंगा मोल।
जो भी उसको नियमित खाता,
सेहत अपनी खूब बनाता।

टमाटर



पहले हरा-भरा फिर लाल,
मेहमानी की एक मिसाल।
एक बेल पर लगता है,
महंगे दामों बिकता है।

पान



राजा के राज में नहीं,
माली के बाग में नहीं।
छीलो तो छिलका नहीं,
खाओ तो स्वाद नहीं।

ओला



ऐसा लिखकर शब्द बनाएं।
फूल, मिठाई, फल बन जाएं।

गुलाबजामुन



पहले थी भोली भाली,
तब सहती थी मार।
अब पहनकर लाल चुनरिया,
कभी ना सहुंगी मार।

मटकी



तीन अक्षर का मेरा नाम,
उल्टा सीधा एक समान।
मध्य कटे तो जज कहलाऊं,
अन्त कटे तो जहा रह जाऊं।

जहाज



काला घोड़ा सफेद सवारी।
एक के बाद एक की बारी।

रोटी-तवा



आंखे हैं पर अंधू हूं,
पैर है पर लंगड़ी हूं।
मुंह है पर मौन हूं,
बताओ तो मैं कौन हूं।

गुड़िया



काला है पर कौआ नहीं,
बेढ़ब है पर हौवा नहीं।
करे नाक से सारे काम,
जल्दी बताओ उसका नाम।

हाथी



हरी-हरी मछली के
हरे-हरे अण्डे,
जल्दी से नाम बोलो,
वरना पड़ेंगे खूब डंडे।

मटर



नारी एक अनोखी देखी,
कान में पहने बाला।
हलुआ-पुड़ी हमें खिलाती,
बतलाओ तुम लाला।

कड़ाही



निखट्टू बैठे रहते,
बस चुप रहते, देखा कते।
जब चांटे मुंह पर पड़ जाते,
शोर मचाते, हल्ला करते।

ढोलक



मांस नहीं, हाड़ नहीं,
सिर्फ अंगुलियां मोरी।
नाम बताओ मुन्ने राजा,
देखूं अक्ल तोरी।

दस्ताने



चार पैर की चंपा चिड़िया,
उठ कर रोज नहाए।
चावल-दाल का नाम न जाने,
कच्ची रोटी खाए।

चकला



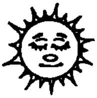
मातृभूमि हित सब सुख छोड़ा,
चूमा फांसी का फन्दा।
भरी जवानी अर्पण कर दी,
था वह पंजाबी बंदा।

भगतसिंह



बर्डशाह से है जिसका नाता,
गन्तव्य स्थान पर हमें पहुंचाता।
आता है जन-जन के काम,
सोचो और बताओ उसका नाम।

स्कूटर



एक तार पर लटके फूल।
रहे किसी के सीने झूल।

माला



भारी-भरकम होता फूल।
खाते उसको काट समूल।

फूल गोभी



एक-एक लेता है फूल।
और चुभाता उसको शूल।

माला बनाने वाला



हंसे सरोवर ऊपर फूल।
गड़ा हुआ दल-दल में मूल।

कमल



रात-रात भर खुशबू देती,
और खिलाती फूल।
दिन होने पर फूलों को,
महकाना जाती भूल।

रजनीगंधा



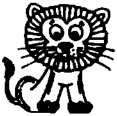
कहते जिसको सूर्य नगर,
सारे जग में नाम, जहां कला।
और शौर्य साधना,
के हैं पावन धाम।

जोधपुर



राजधानी है एक राज्य की,
रहते कभी नवाब।
कुछ तो सोचो और बताओ,
उसका नाम जनाब।

लखनऊ



एक पुराना शहर बसा है,
भागीरथी के तीर,
जहां हुए थे सुभाष जैसे
आजादी के वीर।

कलकत्ता



अंत कटे बगुला बन जाती,
आदि कटे तो हाथी
गाय भैंस न समझो उसको
फिर भी दूध पिलाती।

बकरी



दो पहियों पर चलती है वह,
नहीं चाहिये उसको ईंधन।
नहीं कोई फैलाती प्रदूषण,
आम आदमी का वह वाहन।

साइकिल



सफेद पूँछ पीठ पर रेखा,
दोनों हाथों से खाते देखा।

गिलहरी



काला हाथी उड़ता जाए,
पकडो तो हाथ न आए।

धुआं



लाने पर काला, जलाने पर लाल,
फेंकने पर सफेद, बताओ मेरा भेद।

कोयला



दो अक्षर का मेरा नाम,
उल्टा-सीधा एक समान।
दवा, तेल कुछ भी भर लो,
अब बताओ मेरा नाम।

शीशी



परत-परत पर जमा हुआ है,
इसके ज्ञान ही ज्ञान।
बस्ता खोलोगे तो इसको,
जाओगे पहचान।

पुस्तक



एक अनोखा ताना बाना,
कपड़े सा जाना पहचाना।
बिना सुई के वह सिल जाता,
लेकिन कभी न पहना जाता।

मकड़ी का जाला



एक बड़ा आग का गोला,
सबको खूब जलाता है।
पर जब गोला मुरझा जाता,
अंधकार छा जाता।

सूरज



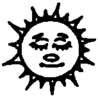
एक बार सिर पर चढ़ जाती,
अपने सब दांतों से खाती।
टूटे दांत काम ना आती,
घर से तुरन्त निकाली जाती।

कंघी



तीन अक्षर का मेरा नाम,
शादी–ब्याह में मेरा काम।
मध्य कटे तो बड़ों को ढोक,
अन्त कटे तो बन गया ढोल।

ढोलक



तीन अक्षर का मेरा नाम,
आती हूं लिखने के काम।

पेंसिल



तीन अक्षर का मेरा नाम,
आता हूं रहने के काम।
मध्यकटे तो बन गया मन,
प्रथम कटे तो बन गया कान।

मकान



तीन अक्षर से मैं बनूं,
पर्यावरण की रक्षा करूं।
प्रथम कटे तो गल जाए,
अन्त कटे तो जंग हो जाए।

जंगल



हांके खेत खींचे गाड़ी,
चड़स चलाए सींचे बाड़ी।
शिव वाहन बल का भण्डार,
भारतीय कृषि का आधार।

बैल



हर घर में मैं पाया जाता,
चकले का हूं साथी।
मुझे चला कर सारी दुनिया,
अपना भोजन पाती।

बेलन



आदि कटे बोली ना अच्छी,
मध्य कटे से सुन्दर पक्षी।
पूरी होकर सींचू खेती,
काम सवारी का भी देती।

मोटर



मेहनत करने पर ही मिलती,
जितना खर्चो उतना बढ़ती।
सबको मैं गुणवान बनाती,
उन्नति–पथ पर आगे ले जाती।

विद्



एक नार की बात दीवानी।
लहू मिले जब छोड़े पानी।

जोंक



अगल बगल घास फूस,
बीच में तबेला।
दिन भर तो भीड़ भाड़,
रात में अकेला।

पनघट



एक जानवर ऐसा,
जिसकी दुम में पैसा।
सर पर है ताज भी,
बादशाह के जैसा।

मोर



अंत कटे तो चम-चम चमकूं,
मध्य कटे तो चचा।
प्रथम अगर काटोगे मेरा,
दूंगा धूम मचा।

चमचा



कभी किसी से नहीं अकड़ते,
वे सबके पैरों में पड़ते।
जो उनको ठुकराकर भागे,
पथ में कांटा उसके लागे।

जूते



जो भी बिस्तर पर जाता है,
मुझको गले लगाता है।
बोझ उठाकर मेरा सिर पर,
मीठी नींद सुलाता है।

नींद



एक नारी के बारह बेटे,
पोते हैं कुल साठ।
हर पोते के साठ हैं बेटे,
नारी बिल्कुल काठ।

घड़ी



मैं हूं एक पवित्र धाम,
तीन अक्षर का मेरा नाम।
प्रथम कटे तो दुःख हो जाऊं,
अन्त कटे साथ मैं जाऊं।

संगम



प्रथम कटे तो रज बने,
अंत कटे तो सूर।
धूल उसे ना ढक सके,
कवि से कोसों दूर।

सूरज



पंडित जिसकी करते पूजा,
बच्चों का मामा, नहीं दूजा।
अपना दुश्मन कहते चोर,
खूब चाहता जिसे चकोर।

चन्द्रमा



दिखते पास हैं पर हैं दूर,
लगते छोटे पर हैं विशाल।
चमचम चमके पर नहीं जुगनू,
बच्चों बूझो कठिन सवाल।

तारे



जिसमें भर दो वही शक्ल ले,
वह जीवन का दूजा नाम।
उसके बिना जग सारा सूना,
कहीं किसी का चले न काम।

जल



तुम पूछो प्रश्न झट से,
उत्तर बतलायेगा फट से।
देख चकित रह जाओगे तुम,
यदि कर सको प्रश्न गणित से।

केलकूलेटर



धरती में मैं पैर छिपाता,
आसमान में शीश उठाता।
हिलता हूँ पर चल ना पाता,
पैरों से हूं भोजन खाता।

पेड़



पानी का है मेरा चोला,
हूँ सफेद पानी का गोला।
उलट कहीं यदि मुझको पाओ,
लाओ-लाओ कह रह जाओ।

बुलबुला



अन्त कटे तो सन्त कहाऊं,
सिर कटते ही मैं तर जाऊं।
पृथ्वी जैसा रूप है मेरा,
बोलो बच्चों, क्या कहलाऊं।

सन्तरा



तीन अक्षर का मेरा नाम,
खाने के आता हूं काम।
मध्य कटे तो बनता चाल,
नाम मेरा बोलो तत्काल।

चावल



अलग करो यदि सिर को मेरे,
तो छाती कहलाऊं।
कितना कोमल हूं मैं देखो,
हवा लगे मर जाऊं।

पसीना

चार पांव हैं खुर नहीं,
दो डैने इक सींग।
लड़ता भिड़ता कुछ नहीं,
सिर्फ मारता डींग।



बिच्छु



एक गांव में बांस गड़ा है,
एक गांव में कुंआ।
एक गांव में आग लगी है,
एक गांव में धुंआ।

हुक्का



एक हाथ लकड़ी की डण्डी,
बने हैं इसमें आठ घर।
ज्यों-ज्यों हवा जाय उस घर में,
त्यों-त्यों निकले मीठे स्वर।

बाँसुरी



चार टांग की हूं एक नारी,
है चलनी सम मेरे छेद।
पीड़ित को आराम मैं देती,
कह भइया यह भेद।

मच्छरदानी



दर पर तेरे बैठा हूं मैं,
करने को रखवाली।
बोलो भैया साथ ले गए,
क्यों मेरी घरवाली।

ताला



जहीं-जहां जाएंगे आप,
पाएंगे मुझे अपने साथ।
सदा प्रकाश से मिलता मन,
अन्धकार मेरा दुश्मन।

छाया



ठण्डी-ठण्डी बड़ी निराली,
जाती मैं पानी से डाली।
गर्मी सहन मैं ना कर पाती,
हो जाती हूं पानी-पानी।

बर्फ



देखो जादूगर का कमाल।
हरे को कर दे पल में लाल।

पान



सर काटो तो रज बन जाता,
अन्त कटे अंधा कहलाता।
प्रकाश देना मेरा काम,
बतलाओ तुम मेरा नाम।

सूरज



भोर उगे सूरज पर छाती,
शरमाये चेहरे पर आती।
ओंठो पर लगती मतवाली,
लगती हूं सबको बाली।

लाली



गरदन बांध हमें लटकाते,
पेट में भर पानी लाते।

बाल्टी



प्रथम कटे रतन बनूं,
मध्य कटे बतन बनूं।

बरतन



प्रथम कटे मैं हाथी बन जाऊं,
अन्त कटे कौआ बन जाऊं।

कागज



प्रथम कटे घट बन जाऊं,
मध्य कटे घूंट बनूं।
दुल्हन के मुख आऊं,
मुझे बताओं चुन्न-मुन्नू।

घूंघट



प्रथम कटे छली बनूं,
पानी प्राणों सम प्यारा।
चिकनी मेरी काया,
हूँ मैं रानी तारा।

मछली



काली माँ के गोरे पूत,
दोनों की भारी करतूत।
भाई का भाई से त्याग,
एक ठंडा है दूजा आग।

चांद-सूरज



बड़ा कटोरा पहने झबला,
ऊपर ओढ़े खाल।
जब-जब उसके चपत लगाऊं,
वह चीखे तत्काल।

तबला



जा को जोड़ बनूं जापान,
खान-पान में मेरा मान।
पहले हरा बाद में लाल,
मुझे कहें ओठों की शान।

पान



कभी नहीं मैं खाता-पीता,
कभी नहीं मैं चलता,
तो भी सदा तुम्हारे घर की,
मैं रखवाली करता।

ताला



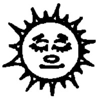
चार पैर की एक सवारी,
थके हुए को लगती प्यारी।
देती है आराम सभी को,
लकड़ी की यह राजकुमारी।

चारपाई



ईंट पत्थरों से बना हूं मैं,
लोग मुझ में रहते हैं।
गर्मी-सर्दी वर्षा से बचाता,
लोग मुझे क्या कहते हैं ?

मकान



प्रथम कटे तो बूल बनूं,
मध्य कटे से ताकत होता अर्थ,
एक वृक्ष मैं राजस्थानी,
मुझ पर अनगिनत शूल।

बबूल



पंख नहीं उड़ता है,
हाथ नहीं पर लड़ता है।
बच्चों-बड़ों सभी का प्यारा,
पर पक्षी निर्जीव बेचारा।

लड़ाकू विमान



सोचो और दिमाग लगाओ,
ऐसा एक अनाज बताओ।
जिसके नाम का तीर्थ कहाए,
दुनिया भर में जाना जाए।

मक्का



अंत कटे तो छल बनती हूं,
बारिश और गर्मी में दिखती।
ठीक-ठीक बतलाना बच्चों,
उत्तर में ना करना गलती।

छतरी



प्रथम कटे तो कीमत,
खाये उसकी हिम्मत।
मध्य कटे तो दवा,
सिरदर्द होवे हवा।

बादाम



है पहाड़ से सागर तट तक काया,
अन्न और धन, जन-मन सभी समाया।

नदी



तीन अक्षर का मेरा नाम,
उल्टा-सीधा एक समान।
मोल चमक से आंका जाए,
पास रखो बनो धनवान।

कनक



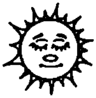
बचपन हरा हरा होता है,
ओर बुढ़ापा पीला।
सभी फलों का राजा है यह,
सचमुच बड़ा रसीला।

आम



दीवार पर चलती,
पर आगे नहीं बढ़ती।

दीवार घड़ी



परकोटा तो हरा है,
भीतर लाल मकान।
चार पाँच नहीं अंदर बैठे,
काले कई जावन।

तरबूज



प्रथम कटे तो बल बन जाऊं,
मध्य कटे से पूंछ कहाऊं।
चार पांव पीठ है चौड़ी,
कूर्सी संग है मेरी जोड़ी।

टेबल



हाथ में लाठी, कमर में धोती,
दुबला पतला तन से।
बिना उठाये अस्त्र भगाया,
अंग्रेजो को वतन से।

गांधीजी



कद से ठिगना, पद से ऊंचा,
वेश भूषा थी सादी।
अठारह महीनों में उसने,
अपनी धाक जमा दी।

लालबहादुर शास्त्री



रंग रूप में लगूं निबौली,
बस गरमी में आती।
मीठी हूं इतनी, गुजराती,
मेवा जानी जाती।

किशमिश



जिसको फूल गुलाब थे भाए,
बच्चों के चाचा कहलाए।
भारत माँ को देख गुलाम,
उठे छोड़ अपने धन धाम।

जवाहरलाल नेहरू



रंग है पीला,
तपाया तो ढीला।
पीटा तो फैला,
कीमती है छैला।

सोना



पेट कटा मन शेष रहा,
सिर कटने पर कान।
पांव कटे तो खाते हैं,
उसको मजदूर किसान।

मकान



लोहे का ऐसा हल,
बटन दबाओ देता चल।
जान फोरियल है निर्माता,
खेती की है यह उपज बढ़ाता।

ट्रेक्टर



तीन अक्षर का नाम है,
पानी जैसा रूप।
हवा तो इसकी मौत है,
जीवन गरमी धूप।

पसीना



मारने को डण्डा,
खाने को मिठाई।
यह चीज हमने,
खेत में उगाई।

ईख



मुझसे भला कौन है लम्बा,
और देश की शान।
मेरे तन पर दौड़ा करते,
वाहन सीना तान।

सड़क



सात रंगों से बन,
आसमान में छितराया।
ज्योंही निकली धूप,
अपने को गायब पाया।

इंद्रधनुष



मुझे लहू दो लो आजादी,
ऐसा कर भारी उद्घोष।
अपनी विजय वाहिनी लेकर,
किया प्रयाण भरकर के जोश।

सुभाष



सफेद खेत, काला बीज।
बोने वाले गाये गीत।

हारमोनियम



एक वर्ण का नाम धराकर,
लोगों को लगती है।
गरमी के मौसम में होती,
ठण्डक से दबती है।

लू



दिन में देता नहीं दिखाई,
मैं निशिचर कहलाता।
पृथ्वी के हर प्राणी का,
मैं मामा माना जाता।

चन्द्रमा



करता नकल आदमी की,
मैं शखामृग कहलाता।
पूछो अदरक का स्वाद अगर,
तो बता नहीं मैं पाता।

बन्दर



प्रथम कटे से पीता बनता,
मध्य कटे से पता।
पीला काला हूं अंदर से,
मेरा नाम बता।

पपीता



पोली लकड़ी ऊपर छेद,
फूंक लगे तो खोले भेद।

बांसुरी



चमड़ा ढ़ाँप छिपाई पोल,
मारी थप्पड़ निकले बोल।

ढोलक



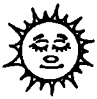
मैं लक्ष्मी जी का वाहन,
अंधकार में रहता हूं।
बच्चों, मुझ जैसे बनो न तुम,
मैं बात पते की कहता हूं।

उल्लू



बिना चोंच पाँ-पंख की चिड़िया,
धागा लेकर चल दी।
डोल रही है आसमान में,
आयेगी ना जल्दी।

गुब्बारा



छोटा हूं, पर बड़ा कहाता,
सदा दही की नदी नहाता।

दही बड़े



पहले 'हां' फिर है बाद,
खाओ अमरूद आएगा याद।

इलाहाबाद



ऊ! ऊ! पैरों तले पड़ा हूं,
पर कहने को मैं खड़ा हूं।

खड़ाऊ



मिला अनोखा बल जिसको,
वह नहीं मानता हार।
बढ़े न खान-पान औषधि से,
है संयम का सार।

संयम



मध्य कटे फुर्र से उड़ जाऊं,
प्रथम कटे पर हार कहाऊं।
वर्षा ऋतु में रिमझिम बरसूं,
सब जन को आनंद पहुंचाऊं।

फुहार



प्रथम कटे समूह बन जाऊं,
मध्य कटे तो केश कहाऊं।
वर्षा ऋतु में उमड़-घुमड़ कर,
कृषकों के मन को हर्षाऊं।

बादल



मध्य कटे तब जीन कहाता,
प्रथम कटे जंगल बन जाता।
सजीव जगत के सदस्यों में,
अनिवार्यतः पाया जाता।

जीवन



अंत कटे तो मेढ़ कहाता,
प्रथम कटे से हूं ढक जाता।
सर्दी में लूं शीत समाधी,
जल और थल दोनों का वासी।

मेढ़क



बौद्ध धर्म का अनुयायी था,
आज भी जिसके मिलते लेखा।
'युद्ध त्याग' की करी प्रतिज्ञा,
कलिंग युद्ध की लाशें देखा।

अशोक महान



रानी नारी से नर बनी,
रणचण्डी बन अड़ी डटी।
झुकी नहीं 'गोरों' के सम्मुख,
मातृभूमि पर मर मिटी।

झाँसी की रानी



मिट्टी का घोड़ा,
लोहे की लगाम,
उस पे बैठे भूरे पठान।

कुम्हार की चाक



कटोरे पे कटोरा,
बेटा बाप से भी गोरा।

नारियल



एक कारीगर ऐसा,
बिना चूना मिट्टी घर बनाये।

मधुमक्खी



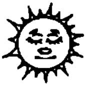
ऐसा कौन अनाज है,
जिकी टेढ़ी नाक है।

चना



हमने-तुमने देखा-भाला,
कौन है हथियार निराला।

भाला



रोज सवेरे खाने जाते,
मिली है देख न पाते।

हवा



काली-काली मुर्गी,
लाल-लाल बच्चे।
आगे जाये मुर्गी,
पीछे आये बच्चे।

रेलगाड़ी



कांच का महल कचनार की कली,
अमृत की बूंद, मिश्री की डली।

अनार



मैं हूं एक छोटा फकीर,
मेरे पेट में लकीर।

गेहूं



मैं हरी मेरे बच्चे काले,
मुझे छोड़ मेरे बच्चे को खा ले।

इलायची



पत्तों के सम उसका रंग,
कुतर कुतर खाने का ढंग।
पिंजरे में भी पाला जाता,
नाम बताओ अब तो ज्ञाता।

तोता



एक केंचुआ चला जाए,
पीछे खेत उगाता जाए।

पैन



प्रथम कटे तो बनती मेली,
मध्य कटे से बनूं चली।
तीन अक्षर का मेरा नाम,
पुष्प लता लो मुझको जान।

चमेली



जीव बड़ा है ताकतवर,
तेज दौड़ में अव्वल नम्बर।
युद्धों से ना घबराता,
काम सवारी के भी आता।

घोड़ा



राजा हूं पर बिन कपड़ों के,
जंगल-जंगल में डोलूं।
डर के मारे कांप उठे सब,
जब अपना मुंह खोलूं।

शेर



अपने अण्डे पर घर रखती,
कौए के संग धोखा करती।
काला तन है, पर मीठे बोल,
राज बताओ उसका खोल।

कोयल



कार्तिकेय का वाहन कहलाया,
राष्ट्रीय पक्षी का सम्मान पाया।
मेघ बुलाने का है उसे वरदान,
नाम बताओ उसका पहचान।

मोर



नारी एक अनोखी घर में,
कान में पहने बाला,
हलुआ पूड़ी हमें खिलाए,
नाम बताओ लाला।

कड़ाही



सींग है पर बकरी नहीं,
काठी है पर घोड़ा नहीं।
हवा के बल पर सैर कराए,
घर-घर में यह मिल जाए।

साइकिल



हाड़ नहीं है नहीं मांस है,
केवल अंगुलियाँ मेरी।
नाम बताओ मुन्ने राजा,
देखूं अक्ल तेरी।

दस्ताने



आदि कटे से रब है,
मध्य कटे से अब है।
तीन अक्षर का एक शब्द वह,
संख्या भी है, सागर भी है।



अरब

एक कली में दो कली,
दो कली में रस।
उत्तर सही बताओगे तो,
रुपये मिलेंगे दस।

नारंगी



दो भाई सगे,
गहरा इनका नाता।
एक दूसरे से बिछड़ जाये तो,
कोई काम ना आता।

जूते



जंगल में आई,
जाट बुन गई खाठ।
बुन तो लो पर,
उधेड़ न सको।

मकड़ी



राम जी का लम्बा,
सीता जी की गोल।
शंकर जी का आडा,
उत्तर इसका जल्दी बोल।

तिलक



है, पर दिखती नहीं,
बहती है मगर पानी नहीं।

हवा



आदि कटे से रहता वर,
मध्य कटे से एक मरुस्थल।
पत्रिका का एक परिशिष्ट मैं,
अब तो लो पहचान।

थावर



वरदी पहन,उठाकर थैला,
नियत समय पर वह चल देता।
गली-गली, घर-घर जाकर के,
जिसका हो उसको दे देता।

डाकिया

तीन पहेली उत्तर एक



(1)

थल में पकड़ूं पांव को,
जल में पकड़ूं हाथ।
मरा हुआ सदा रहता हूं,
जिन्दों के ही साथ।



(2)

बिन पैरों के चलते देखा,
इत-उत उसको फिरते देखा।
काम अनोखे करते देखा,
पानी से वह मरते देखा।



(3)

बरखा-सर्दी-धूप पड़ी हो,
पथ में पत्थर, कील गड़ी हो।
इन सबसे मैं तुम्हें बचाऊं,
फिर भी हर दिन रगड़ा जाऊं।

जूता

पांच पहेलियां उत्तर एक



(1)

पीत पीताम्बर ओढ़े खड़ी,
कोमल उसकी जात।
खड़ी ठौर पर भाग गयी,
देखी जो बरसात।



(2)

आग लेकर नहाती,
शीश कटाय
पानी से नहाती,
गायब हो जाय।



(3)

दिन को सोये,
रात को खोए।
जितना रोये,
उतना खोये।



(4)

एक चीज है रात को रोती,
सुबह देखते तो मिलता मोती।



(5)

बाट जोवती प्रभात की,
धरा के अन्दर सोने।
खड़ी रोवती सारी रैन,
निज रूप से तिमिर को खोने।

मोमबत्ती

आठ पहेलियां उत्तर एक



(1)

एक पहेली मैं कहूं,
तू सुन ले मेरे पूत।
बिना परों वह उड़ गई,
बांध गले में सूत।

(2)



पर और बाजू कुछ नहीं रखे,
खाना खाए न पानी चखे।
गोस्त पोस्त के नहीं वह पास,
पल में उड़-के चढ़े आकाश।

(3)



चिड़िया नहीं है,
पर उड़ती है आसामान पर।
रखती जबान नहीं,
पर बोलती है फर फर।

(4)

दुम हाथ में हमारे,
वह आसमान में नाचे।
चाहे जिधर घुमाएं,
वह बस में है हमारे।

(5)



सबके सिर पर देखो,
कैसा चढ़ा है भूत।
पखेरू तो छोड़ दिया,
अब खींच रहे हैं सूत ।

(6)



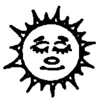
ज्यों ज्यों दी गई ढील,
छोटी हो गई चील।
हवा में ही हुई शिकार,
काट कर ले गया भील।

(7)



एक पखेरु भरे तरार,
हवा के ऊपर करे करार।
हाथ से उड़ हाथ पे आवे,
शमा के आशिक नाम कहावे।

(8)



पूंछ के सहारे हौले-हौले उड़ी,
देखते ही देखते आकाश पर चढ़ी।
सौत को देख हवा में ही भिड़ी,
डोर खिंचते ही जमीन पर पड़ी।

जब ठंडे दिनों में अलाव को घेर कर लोग बैठते हैं, बच्चे दादा या नाना के चारों ओर सिमट आते हैं, माँ, दादी, नानी के गले में नन्ही बाहें डाल कर उनसे कुछ सुनाने की फर्माइशें की जाती हैं या फुर्सत के क्षणों में दोस्तों की भीड़ जुटती है तो पहेलियाँ सुनाने और उनके हल बूझने के अवसर अपने आप आ जाते हैं।

पहेलियाँ ज्यादा कठिन नहीं होतीं और उनके लिए मस्तिष्क पर ज्यादा जोर भी नहीं देना पड़ता। बस थोड़ा बुद्धि कौशल काफी है। कभी-कभी पहेली में ही उसके उत्तर का संकेत छिपा होता है। पहेली बूझ लेने पर सहज उल्लास होना स्वाभाविक है।

इस तेज रफ़्तार जीवन में और आपा-धापी के इस भाग दौड़ में किसे फुर्सत है पहेलियाँ सुनने सुनाने का? लोग इन्हें भूलते जा रहे हैं फिर भी रोचक पहेलियों का आज भी महत्व है। तीन चार पहेलियाँ ही याद रहती हैं। एक साथ इतनी पहेलियाँ संग्रहीत मिल जाएं तो क्या कहने। इसी से इस पुस्तक की उपयोगिता बढ़ जाती है।

अनंत कुशवाहा

राजस्थान पत्रिका प्रकाशन